RNI : CTHIN/25/A1911

हिन्दी दैनिक

लोकतंत्र प्रहरी

● वर्ष-01 ● अंक- 56 ● भिलाई, शुक्रवार 29 अगस्त 2025 ● हिन्दी दैनिक ● पृष्ठ संख्या-8 ● मूल्य - 2 रुपया ● संपादक- संजय तिवारी, मो. 9200000214

संक्षिप्त समाचार

युवक पर पहिया चढ़ने के बाद भी नहीं रोकी कार, मौके पर ही हुई दर्दनाक मौत

गाजियाबाद। गाजियाबाद के मधुबन बापूधाम थानाक्षेत्र में इंसानियत को शर्मसार करने वाली एक घटना सामने आई, जहां एक तेज रफ्तार बेकाबू कार ने सड़क पर चल रहे एक मानसिक रूप से विक्षिप्त युवक को बेरहमी से कुचल दिया। दिल दहलाने वाली इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस हरकत में आई और देर रात गाड़ी के नंबर के आधार पर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार, यह घटना सोमवार दोपहर करीब एक बजे संजयनगर सेक्टर-23 स्थित फॉर्च्यून होटल के सामने घटी। लगभग 35 वर्षीय एक मानसिक विक्षिप्त युवक सड़क के डिवाइडर पर बैठा हुआ था। अचानक वह डिवाइडर से उठकर सड़क की ओर चलने लगा, तभी तेज गति से आ रही एक कार ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। हैरत की बात यह है कि युवक पर गाड़ी का अगला पहिया चढ़ने के बाद भी चालक ने कार नहीं रोकी और उसे रौंदते हुए मौके से फरार हो गया, जिससे युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

निक्की के भाई की पत्नी मीनाक्षी भाटी का बड़ा खुलासा

ग्रेटर नोएडा। निक्की हत्याकांड मामले में अब मृतका के भाई रोहित की पत्नी और निक्की की भाभी मीनाक्षी भाटी का बयान सामने आया है, जिसने कई अहम खुलासे किए हैं। मीनाक्षी, जो निक्की के भाई रोहित की पत्नी हैं, ने निक्की के परिवार पर दहेज, पारिवारिक कलह और पंचायतों से जुड़े कई गंभीर आरोप लगाए। मीनाक्षी ने कहा कि घटना के वक्त आरोपी विपिन घर के नीचे था और वीडियो में वह दिखाई भी नहीं दे रहा है। वीडियो में निक्की की बहन कंचन उसे बचाने की कोशिश करती नजर आई। मीनाक्षी के अनुसार, वीडियो देखकर ऐसा लगता है कि निक्की ने खुद आग लगाई, विपिन का इसमें हाथ नहीं था। उन्होंने बताया कि विपिन ने निक्की के नाम का टैटू भी बनवा रखा था, जिससे पता चलता है कि वह उसे बहुत चाहता था।

गूगल मैप ने पहुंचाया बंद पुलिया पर, वैन नदी में गिरी, 3 की मौत, 1 लापता

चित्तौड़गढ़। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में एक दर्दनाक हादसा सामने आया है, जहाँ गूगल मैप के भरोसे एक परिवार की वैन बंद पुलिया पर पहुँच गई और बनास नदी में गिर गई। इस हादसे में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मौत हो गई, जबकि एक महिला अभी भी लापता है। यह घटना राशमी थाना क्षेत्र के सोमी-उपेरड़ा पुलिया पर देर रात करीब 1 बजे हुई। चित्तौड़गढ़ के कानाखेड़ा गाँव का एक परिवार भीलवाड़ा में सवाई भोज मंदिर से दर्शन कर लौट रहा था। रास्ते में वे भटक गए और गूगल मैप की लोकेशन ने उन्हें तीन साल से बंद इस पुलिया पर पहुँचा दिया। पुलिस के अनुसार, मातृकुंडिया डैम के गेट खोले जाने के कारण नदी उफान पर थी और पानी पुलिया के ऊपर से बह रहा था।

बस्तर संभाग में बारिश का तांडव

जगदलपुर में तीन मंजिला मकान धंसा-जान बचाकर भागे लोग.....

जगदलपुर/ संवाददाता

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में बाढ़ का 'तांडव' जारी है। लगातार बारिश होने से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। बस्तर संभाग के कई जिलों में बारिश का जलजला देखने को मिल रहा है। लगातार चार दिनों से बारिश कहर बरपा रही है। लोगों का जीना मुहाल हो गया है। बुधवार की रात को जगदलपुर के श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड में बनी एक पुराने मकान का प्रथम दल अचानक से धंस गया। एसडीआरएफटीम के साथ ही मेयर और निगम दस्ता भी बचाव कार्य में लगा है। पीड़ितों को बाहर निकालकर राहत शिविरों में भेजा जा रहा है। सूचना पर एसडीआरएफ टीम के साथ ही महापौर और निगम दस्ता मौके पर पहुँचा, जहाँ पीड़ित परिवार को बाहर निकाला गया। बस्तर में लगातार हो रही बारिश के थमने के बाद लोगों ने राहत की सांस ली है। सड़कों में भरे बारिश का पानी धीरे धीरे सड़क से नीचे उतर रहा है। वहीं पुल-पुलिया के क्षतिग्रस्त होने के बाद उसका सर्वेक्षण कार्य भी शुरू हो गया है। बरसात के चलते जिन-जिन लोगों के घर ढहे हैं, उनका भी सर्वे करने के साथ ही मुआवजा राशि देने के लिए कहा जा रहा है। बीती रात को श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड में एक पुराने घर का पहला मंजिल धंस गया, जिसकी जानकारी लगते ही परिजन बाहर निकाले। दूसरी ओर सुकमा के यहां के 611 से ज्यादा राहत शिविरों में लोग को सुरक्षित रखा गया है। यहां पर हर तरह की मूलभूत सुविधाओं का ख्याल रखा जा रहा है। जिला प्रशासन ने भोजन और ठहरने की पुख्ता व्यवस्था की है। लगातार बारिश होने से नदी और नालों का जलस्तर बढ़ा हुआ है। कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव ने लोगों से अपील की है कि स्थिति सामान्य होने तक वो अनावश्यक यात्रा से बचें। वहीं एनडीआरएफकी टीम ने बाढ़ और बरसात में फंसे 611 से ज्यादा लोगों की जान बचाई है। सीएम विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ के बाढ़ प्रभावित जिलों बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा और बस्तर में राहत और बचाव कार्यों की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि जनता की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रभावित परिवार को असुविधा न हो, इसके लिए प्रशासन पूरी सक्रियता से कार्य करे । छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने जापान प्रवास के दौरान बस्तर संभाग में आई बाढ़ की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने राजस्व सचिव रीना बाबासाहेब कंगाले और बस्तर संभाग आयुक्त डोमन सिंह से दूरभाष पर चर्चा कर राहत एवं बचाव कार्यों की जानकारी ली और जरूरी निर्देश दिए। सीएम विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ के बाढ़ प्रभावित जिलों बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा और बस्तर में राहत और बचाव कार्यों की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि जनता की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रभावित परिवार को असुविधा न हो, इसके लिए प्रशासन पूरी सक्रियता से कार्य करे । छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने जापान प्रवास के दौरान बस्तर संभाग में आई बाढ़ की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने राजस्व सचिव रीना बाबासाहेब कंगाले और बस्तर संभाग आयुक्त डोमन सिंह से दूरभाष पर चर्चा कर राहत एवं बचाव कार्यों की जानकारी ली और जरूरी निर्देश दिए।

एक साल की बच्ची के जन्मदिन की खुशियां मातम में बदलीं, पालघर में इमारत ढही, 15 की मौत

महाराष्ट्र के पालघर जिले के विरार में इमारत ढहने की घटना में मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गई है, क्योंकि बचाव दल ने बुधवार और गुरुवार की दरम्यानी रात तीन और शव बरामद किए हैं। उन्होंने बताया कि लगभग 50 फ्लैटों वाली यह अनधिकृत चार मंजिला इमारत बुधवार रात 12.05 बजे विरार इलाके के विजय नगर में एक खाली पड़े मकान पर गिर गई। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लगभग 50 फ्लैट वाली यह अनधिकृत चार मंजिला इमारत मंगलवार रात 12 बजकर पांच मिनट पर विरार इलाके के विजय नगर में एक खाली पड़े मकान पर गिर गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, चौथी मंजिल पर एक साल की बच्ची का जन्मदिन मनाया जा रहा था, तभी इमारत के एक हिस्से में 12 फ्लैट ढह गए, जिससे फ्लैट में रहने वाले लोग और मेहमान मलबे में दब गए। पालघर की जिलाधिकारी डॉ. इंदु रानी जाखड़ ने बृहस्पतिवार सुबह पुष्टि की कि इस घटना में मृतकों की संख्या 15 हो गई है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और अन्य बचाव दल यह सुनिश्चित करने के लिए मलबा हटाने का काम जारी रखेंगे।

अब कॉलेज जानें में नहीं होगी दिक्कत!

यू-स्पेशल बसों को सीएम रेखा ने दिखाई हरी झंडी...

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने गुरुवार को दिल्ली के मंत्री पंकज कुमार सिंह के साथ मिलकर 'यू-स्पेशल' योजना के तहत कॉलेज के छात्रों के लिए बसों को हरी झंडी दिखाई। पत्रकारों से बात करते हुए, दिल्ली की मुख्यमंत्री ने कहा कि यह यू-स्पेशल योजना वर्षों से बंद थी, जिसकी न तो आप सरकार और न ही कांग्रेस सरकार ने परवाह की। मुझे खुशी है कि भाजपा सरकार ने अपने छोटे से कार्यकाल में ही दिल्ली विश्वविद्यालय में एक बार फिर रौनक ला दी है, जहाँ छात्र यू-स्पेशल के ज़रिए घर से विश्वविद्यालय और घर से विश्वविद्यालय तक यात्रा कर सकेंगे। सीएम गुप्ता ने कहा कि इससे न केवल दिल्ली विश्वविद्यालय को वही पुराना सम्मान और ऊर्जा मिलेगी, बल्कि दिल्ली के परिवहन को स्वच्छ हवा भी मिलेगी। मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों को बधाई देती हूँ, उन्हें इसका इस्तेमाल करना चाहिए। मेट्रो रियायती पास के बारे में, सीएम गुप्ता ने कहा कि हाँ, हम इस पर चर्चा करेंगे। छात्रों के लिए सुविधाएँ होनी चाहिए। इस बीच, आज सुबह, दिल्ली सरकार ने लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग (आई एंड एफ़सी) में पिछले 20 वर्षों में ?1 करोड़ से अधिक के मध्यस्थता मामलों की समीक्षा की घोषणा की। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए कहा कि लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग (आई एंड एफ़सी) में पिछले 20 वर्षों में 1 करोड़ से अधिक के मध्यस्थता मामलों की समीक्षा की जाएगी।

शिबू सोरेन को भारत रत्न देने का प्रस्ताव विधानसभा से पारित, विपक्ष ने भी जताई सहमति

नई दिल्ली। झारखंड विधानसभा ने गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत शिबू सोरेन को भारत रत्न देने की मांग वाला प्रस्ताव पारित कर दिया। परिवहन मंत्री दीपक बिरुआ द्वारा पेश किए गए इस प्रस्ताव को मतदान द्वारा पारित कर दिया गया। झामुमो के संस्थापक शिबू सोरेन का 4 अगस्त को दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वह 81 वर्ष के थे। झारखंड के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पूर्व राज्यसभा सांसद ने अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ी है ।

सीएम मान ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया

बाढ़ में फंसे लोगों को दिया अपना हेलीकॉप्टर

पंजाब। भारी बारिश के बाद पंजाब के कई जिलों में बाढ़ आ गई है। मुख्यमंत्री भगवंत मान और कैबिनेट मंत्री विभिन्न बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान गुरदासपुर पहुँचे जहाँ उन्होंने बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया और राहत कार्यों का जायज़ा लिया। उन्होंने इस बारे में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट भी शेयर की। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि यहां आने के बाद पता चला है कि कई गांवों में लोग फंसे हुए हैं। लोग अपने घरों की छतों पर बैठे हैं और उन्हें राशन भी नहीं मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोगों ने हमें 92 सीटों वाला हेलीकॉप्टर दिया था। अब मैं वही हेलीकॉप्टर लोगों को सौंप रहा हूं। मैं इसे यहीं छोड़ रहा हूँ ताकि इसके ज़रिए लोगों तक दूध, राशन और पानी पहुँचाया जा सके।

केजरीवाल का हमला-कांग्रेस ने दिया करारा जवाब

नेशनल हेराल्ड केस....में गांधी परिवार से कोई जेल नहीं गया

नई दिल्ली। एजेंसी

दिल्ली में पार्टी के सभी विधायकों, निगम पार्षदों और सभी पूर्व प्रत्याशियों के साथ आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मुलाकात की और सभी को संबोधित भी किया। इस दौरान पूर्व सीएम केजरीवाल ने कहा कि नेशनल हेराल्ड के मामले में आजतक गांधी परिवार का कोई भी व्यक्ति जेल नहीं गया। 2014 का लोकसभा चुनाव जीजा जी के नाम पर लड़ा और जीता गया मगर उसपर भी कुछ नहीं किया गया। आजकल तो लोग कह रहे हैं कि कांग्रेस ने कॉम्प्रोमाइज कर रखा है। आम आदमी पार्टी कॉम्प्रोमाइज की राजनीति नहीं करती है। आगे कहा कि हाल ही में सौरभ भारद्वाज के घर पर छापा मारा। इस दौरान ईडी ने सौरभ भारद्वाज के ऊपर बयान बदलने का दबाव बनाया। ईडी वाले सौरभ भारद्वाज को गिरफ्तार की धमकी देने लगे। तब इन्होंने साफ कर दिया, मुझे गिरफ्तार करना है तो कर लो। ईडी ने परिवार को भी डराने की कोशिश की लेकिन कोई डरा नहीं। आगे केजरीवाल ने कहा कि भाजपा की सरकार छह महीने में ही बेहाल हो गई। दिल्ली में भाजपा की छह महीने से सरकार है और इन्होंने दिल्ली का बहुत बुरा हाल कर दिया है। अब दिल्लीवालों को भी एहसास हो गया कि आम आदमी पार्टी की सरकार कितनी अच्छी थी। दिल्ली में बिजली कटौती नहीं होती थी। लेकिन बीजेपी सरकार में बिजली का बुरा हाल है। निजी स्कूलों ने बेतहाशा फीस बढ़ा दी है।

बाढ़ प्रबंधन के लिए मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बनाई कमेटी

चंडीगढ़। पंजाब में बाढ़ की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्री भगवंत मान ने एक फ्लड मैनेजमेंट कमेटी गठित की है। जालंधर में पहले से ही एक फ्लड कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, जो स्थिति पर नजर रख रहा है। कमेटी में शामिल मंत्रियों को विभिन्न जिलों में बाढ़ प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्वास्थ्य मंत्री बलबीर सिंह, गुरमीत सिंह खुड़िया और बरिंदर कुमार गोयल पूरे पंजाब में बाढ़ की स्थिति पर निगरानी रखेंगे। कपूरथला में मोहिंदर भगत और हरदीप सिंह मुंडिया को जिम्मेदारी दी गई है, जबकि तरन तारन में लालजीत सिंह भुल्लर और हरभजन सिंह ईटीओ हालात पर नजर रखेंगे।

आर-पार के मूड में सीएम ममता बनर्जी

जब तक मैं जिंदा हूं,लोगों का मताधिकार नहीं छीनने दूंगी....

कोलकाता/ संवाददाता

बिहार के बाद अन्य राज्यों में गहन मतदाता पुनरीक्षण को लेकर सियासी विवाद खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। विपक्ष इसे लेकर लगातार मोदी सरकार और चुनाव आयोग का विरोध कर रहा है। इस बीच, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने खुले शब्दों में चेतावनी दी है। उन्होंने कोलकाता में तृणमूल कांग्रेस की छात्र शाखा की एक रैली को संबोधित करते कहा कि वह किसी को भी लोगों का मताधिकार नहीं छीनने देंगी। कोलकाता में तृणमूल कांग्रेस की छात्र शाखा की रैली को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने दावा किया कि भाजपा ने मतदाता सूची से मतदाताओं के नाम हटाने के उद्देश्य से सर्वेक्षण करने के लिए देश भर से पश्चिम बंगाल में 500 से ज्यादा टीमें तैनात की हैं। रैली में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि अब आपको खुद जांच करनी होगी कि आपका नाम अभी भी मतदाता सूची में है या कट गया है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक मैं जिंदा हूं, किसी को भी लोगों का मताधिकार नहीं छीनने दूंगी। सीएम बनर्जी ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग राज्य सरकार के अधिकारियों को धमका रहा है। उन्होंने दावा किया कि आयोग का अधिकार क्षेत्र केवल चुनाव के दौरान के तीन महीनों तक है, पूरे साल नहीं। आगे बोलते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बंगालियों द्वारा निभाई गई।

निर्यातकों को राहत देने की योजना

उच्च अमेरिकी शुल्क से निपटने की तैयारी में जुटी केन्द्र सरकार

नयी दिल्ली/ एजेंसी

अमेरिका में भारतीय वस्तुओं के आयात पर 50 प्रतिशत का भारी शुल्क लगाए जाने से परेशान निर्यातकों को राहत देने के लिए केंद्र सरकार कई उपायों पर काम कर रही है. इनमें निर्यात संवर्धन मिशन की शुरुआत, ऋण लौटाने को लेकर मोहलत और नकदी से जुड़ी मदद शामिल हैं. एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी. अधिकारी ने कहा कि अमेरिका का भारतीय वस्तुओं पर लगाया गया ऊंचा शुल्क देश के लिए एक चेतावनी होने के साथ निर्यात में विविधता लाने का एक अवसर भी है. इस संदर्भ में निर्यातकों की तरफ से की गई अपीलों पर उन्होंने कहा, सरकार निर्यातकों की समस्याओं से पूरी तरह अवगत है और उन्हें राहत देने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं. अमेरिका ने 27 अगस्त से भारतीय उत्पादों पर कुल 50 प्रतिशत शुल्क लगाना शुरू कर दिया है. इसमें रूस से तेल खरीद जारी रखने के जुर्माने के तौर पर लगाया गया 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क भी शामिल है. यह फैसला भारत पर दबाव बनाने की अमेरिकी कोशिश के रूप में देखा जा रहा है. इससे मशीनरी, झींगा, वस्त्र, चमड़ा-फुटवियर और रत्न एवं आभूषण जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों के निर्यात पर गहरा असर पड़ने की आशंका है. सरकार अब सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) से जुड़े निर्यातकों के लिए आपातकालीन ऋण गारंटी योजना, ऋण पर एक साल तक की मोहलत और निर्यात भुगतान की समय-सीमा बढ़ाने जैसे कदम उठाने पर विचार कर रही है,

ताकि नकदी प्रवाह की समस्या को हल किया जा सके. इसके साथ ही सरकार ई-कॉमर्स निर्यात हब योजना को भी तेजी से लागू करने की दिशा में प्रयास कर रही है. बजट में घोषित निर्यात संवर्धन मिशन को 2025 से 2031 तक छह वर्षों के लिए लागू करने की योजना है जिसके तहत करीब 25,000 करोड़ रुपये के समर्थन उपाय प्रस्तावित हैं. यह दो उप-योजनाओं 'निर्यात प्रोत्साहन' (10,000 करोड़ रुपये से अधिक) और 'निर्यात दिशा' (14,500 करोड़ रुपये से अधिक) के तहत लागू की जाएगी. निर्यातकों का कहना है कि इतने ऊंचे शुल्क पर अमेरिका को निर्यात कर पाना बहुत मुश्किल हो गया है. इसके अलावा पूरी तरह अमेरिकी बाजार पर ही निर्भर निर्यातकों के समक्ष गंभीर स्थिति पैदा हो गई है. इन समस्याओं को लेकर निर्यातकों के निकाय फियो के एक प्रतिनिधिमंडल ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की और अमेरिकी शुल्क वृद्धि से पैदा हुई चुनौतियों से उन्हें अवगत कराया. फियो के अध्यक्ष एस.सी. रल्हन के नेतृत्व में मिले प्रतिनिधिमंडल को वित्त मंत्री ने भरोसा दिलाया कि सरकार इस मुश्किल समय में निर्यातकों के साथ खड़ी है और उनकी चिंताओं को दूर करने के लिए हरसंभव रास्ता तलाशेगी. वित्त वर्ष 2024-25 में अमेरिका के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार 131.8 अरब डॉलर रहा, जिसमें भारत का निर्यात 86.5 अरब डॉलर का था.

व्यापार समझौते पर बातचीत जल्द बहाल होने की उम्मीद, शुल्क मुद्दे का हल जरूरी: अधिकारी

भारत को उम्मीद है कि अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर बातचीत का सिलसिला जल्द ही बहाल होगा लेकिन भारतीय उत्पादों पर अमेरिका में लगाए गए उच्च शुल्क का मसला हल करना इस दिशा में प्रगति के लिए जरूरी होगा. सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी. अधिकारी ने कहा कि फिलहाल अगले दौर की व्यापार वार्ता की तारीखें तय नहीं हुई हैं, लेकिन बातचीत बहाल होने की संभावना है. उन्होंने कहा, हम जल्द ही फिर से बातचीत की मेज पर लौटने की उम्मीद कर रहे हैं जब भी समझौता होगा, उस समय दोनों पक्षों को शुल्क के मुद्दों का समाधान करना होगा ।

CMYK

जिला के विभिन्न क्षेत्रों के चौक चौराहों पर गणपति बप्पा की मूर्ति स्थापना शुभ मुहूर्त में किया गया

बेमेतरा। देवो के देव महादेव की पुत्र भगवान श्रीगणेश जी चतुर्थी पर्व पर श्रद्धालुओं ने भारी उत्साह श्रद्धा भक्ति के साथ जिला मुख्यालय सहित ग्रामीण क्षेत्रों में जगह जगह विभिन्न चौक चौराहों के पंडाल में लंबोदर महाराज की छोटे से लेकर बड़ी बड़ी मूर्ति की स्थापना विभिन्न शुभ मुहूर्त में स्थापित किया गया इसके पूर्व शहर के मुख्य चौक-चौराहों में तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। सोमवार व मंगलवार से ही लोग अपने गांव घरों के लिए प्रतिमा ले जाते हुए नजर आए। हिंदू धर्म में भगवान गणेश की उपासना का विशेष महत्व विघ्नहर्ता भगवान गणेश प्रथम पूजनीय देवता है। मान्यता है कि भगवान गणेश की उपासना करने से सुख-समृद्धि, बुद्धि व बल आदि का आशीर्वाद प्राप्त होता है। हर साल भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को भगवान गणेश का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जाता है। गणपति बप्पा को लोग ढोल-नगाड़ों के साथ ही सेवा गीत और उन्हें स्थापित कर विधि-विधान से पूजा-अर्चना किया। वहीं लगातार 10 दिनों तक पूजा अर्चना के साथ भक्तगण सेवा करेंगे। उसके बाद अनंत चतुर्दशी के दिन उन्हें विदा किया जाएगा। गणेश चतुर्थी को लेकर शहर के चौक-चौराहों और गली-मोहल्लों से लेकर ग्रामीण अंचलों में तैयारियां पूरी कर ली गई थी । गणेशोत्सव के लिए समितियों ने आकर्षक और भव्य पंडाल बना कर तैयारी कर गणेश स्थापना किया गया बेरला ब्लॉक के ग्रामीण अंचल में अलग-अलग आकर में भगवान गणेश की प्रतिमाएं विराजमान किया गया है। शहर मुख्यालय में दर्जनों स्थानों पर धूमधाम से विघ्नहर्ता की स्थापना हुई । जिसमें पूर्व की तरह कोबीया मैदान पर इस बार अन्य वर्षों से अलग हटकर साज सज्जा की गई है। राम गणेश उत्सव समिति ने जहां भगवान गणेश की प्रतिमाएं स्थापना करने के भव्य पंडाल बनवाए वहीं आकर्षर्ण सजावट की तैयारियां की गई हैं। इसके अलावा भक्तिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन में छत्तीसगढ़ के ख्याति प्राप्त विभिन्न कलाकारों का बुलाया गया है। शहर के गश्ती चौक, बाजार पारा, नयापारा, दुर्ग रोड, प्रताप चौक, बस स्टैंड सहित अन्य स्थलों पर गणपति बप्पा की मूर्ति को स्थापित किया गया है । अमचो में भी जगह-जगह विघ्नहर्ता भगवान गणेश जी के प्रतिमा स्थापित की गई है।बाल गणेशोत्सव समिति द्वारा डीलवा पारा में भी ग्रामाचार्य विलास शर्मा के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ गांव एंव क्षेत्रो की सुख शांति एवं समृद्धि तथा खुशहाली की कामना हेतु भगवान विघ्नहर्ता का स्थापना किया गया है ।

गांव को भगवान बनाते हैं और शहर को आदमी : ब्रिगेडियर गणेशम

ग्रामीण नवाचार के पुजारी: ब्रिगेडियर गणेशम पहुंचे बेमेतरा के कंदई गांव

बेमेतरा। गांव को भगवान बनाते हैं और शहर को आदमी यह प्रेरक संदेश दिया रिटायर्ड ब्रिगेडियर पी. गणेशम ने, जो अपने शोध एवं नवाचार यात्रा के दौरान बेमेतरा के सेवाभावी समाजसेवी संस्था सहयोग के सभी सदस्यों से मिले और उनके द्वारा किए जा रहे बेमेतरा शहर को स्वच्छ, और हरा भरा बनाने में दशकों से किए जा रहे प्रयास की सराहना किए और इसके पश्चात ग्रामीणों से मिलने समाजसेवी किसान सुशील शर्मा के गांव छोटा कंदई पहुंच किसानों से संवाद किए और कहा कि गाँव और किसानों को गाँव में ज्ञान का संरक्षण करना हैं और स्वयं कृषि से लेकर ग्रामीण मुद्दों के समाधान को ढूंढना है। ब्रिगेडियर गणेशम जी ने सेना में रहते हुए देश की सुरक्षा के लिए टैंक निर्माण में योगदान दिया, जिसके लिए उन्हें राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे समाजसेवा के पथ पर सक्रिय हैं और अपनी संस्था पहले सृजनम के माध्यम से पिछले 30 वर्षों से ग्रामीण भारत में जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अब तक 1,000 से अधिक ग्रामीण नवाचारों को खोजकर देश-दुनिया तक पहुंचाया है, और सैकड़ों किसानों व ग्रामीणों को राष्ट्रीय एवं राष्ट्रपति स्तर के पुरस्कार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने प्रवास के दौरान उन्होंने समाजसेवी एवं किसान सहयोग संस्था से जुड़े सुशील शर्मा के गांव छोटे कंदई में किसानों संग आत्मीय बातचीत की। उन्होंने गौशाला और खेतों का अवलोकन कर ग्रामीण नवाचारों का महत्व बताया। छोटे-छोटे उदाहरणों से समझाते हुए उन्होंने कहा गांव का जीवन प्रकृति और आत्मीयता से जुड़ा होता है। यहां इंसान भगवान के करीब महसूस करता है। जबकि शहरों में मनुष्य की पहचान और बनावट आदमी बनाता है। इस अवसर पर मानव तीर्थ, किरीतपुर से आए युवा शोधार्थी अंकित पोगुला, राममिलन यादव, समाधान कॉलेज से अवधेश पटेल, अविनाश तिवारी और पूर्व प्राचार्य साहब सिंह ठाकुर भी मौजूद रहे। अंकित पोगुला ने मानव तीर्थ की विशेष गतिविधियों और प्रयोगों का परिचय दिया, जहां देशभर से युवा श्रम, व्यवहार और विचार अभ्यास के माध्यम से जीवन जीने की नई दिशा सीखते हैं। गांव के किसानों ने उत्साहपूर्वक ब्रिगेडियर गणेशम जी से सवाल पूछे, जिनका उन्होंने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया। इस मौके पर बेमेतरा के अधिवक्ता बृजमोहन शर्मा भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने कहा कि ब्रिगेडियर गणेशम का यह दौरा उनके लिए प्रेरणादायक और मार्गदर्शक रहा।

जिले की समितियों एवं निजी दुकानों में 14 हजार 189 टन खाद विक्रय हेतु शेष

महासमुंद। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह के निर्देशानुसार खरीफ वर्ष 2025 में जिले के प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों में पर्याप्त मात्रा में खाद का भंडारण किया गया है। कलेक्टर ने सभी सहकारी समितियों एवं निजी दुकानों में पॉस मशीन के माध्यम से विक्रय करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही निजी दुकानों में अवैध भंडारण पाए जाने पर जब्ती की कार्रवाई करने सख्त निर्देश दिए है। अधिकारियों द्वारा लगातार खाद की उपलब्धता एवं वितरण पर निगरानी रखी जा रही है। उप संचालक कृषि एफआर. कश्यप ने जानकारी दी कि जिले की सभी कृषक सहकारी समितियों एवं निजी दुकानों से खाद प्राप्त कर सकते हैं। 1 अप्रैल से 26 अगस्त की स्थिति में जिले के सहकारी एवं निजी समितियों में कुल 86 हजार 991 मीट्रिक टन खाद का भंडारण किया गया है, जिसमें से 72 हजार 802 टन खाद का वितरण किया जा चुका है। अब तक भंडारित खाद में सहकारी समितियों एवं निजी दुकानों में यूरिया 44 हजार 977 टन, सुपर फॉस्फेट 21 हजार 24 टन, पोटाश 3 हजार 498, डी.ए.पी. 9 हजार 981 एवं एन.पी.के 7 हजार 511 टन भंडारित किया गया है। वर्तमान में 14 हजार 189 टन खाद विक्रय हेतु शेष है। जिसमें यूरिया 5 हजार 889 टन, सुपर फॉस्फेट 4 हजार 243 टन, पोटाश 704 टन, डी.ए.पी. एक हजार 424 एवं एक हजार 929 टन एन.पी.के खाद उपलब्ध है, जिसका समितियों द्वारा किसानों को विक्रय किया जा रहा है। अब तक भंडारण के विरुद्ध 83.69 प्रतिशत वितरण किया जा चुका है।

आकांक्षी जिला तथा विकासखंड कार्यक्रम की समीक्षा बैठक 29 को

महासमुंद। संयुक्त सचिव भारत सरकार नई दिल्ली एवं जिले के केंद्रीय प्रभारी अधिकारी, आकांक्षी जिला कार्यक्रम अलरमेलमंगई डी की अध्यक्षता में 29 अगस्त 2025 को दोपहर 03:00 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समीक्षा बैठक आयोजित किया गया है। बैठक में आकांक्षी जिला कार्यक्रम तथा आकांक्षी विकासखण्ड कार्यक्रम अंतर्गत नीति आयोग द्वारा तय किए गए सूचकांकों की प्रगति के संबंध में समीक्षा की जाएगी। सभी संबंधित अधिकारियों को नियत तिथि एवं समय पर निर्धारित जानकारी सहित उपस्थित होने के निर्देश दिए हैं।

साक्षी जायसवाल को दिल्ली में मिला राष्ट्रीय कलचुरी गौरव सर्वोच्च सम्मान

छत्तीसगढ़ की पहली बालिका साइंटिस्ट जिसने वायरलेस संचार तकनीकी का विस्तार किया

दो साल के शोध के बाद जवाहर नवोदय विद्यालय पाण्डुका में पढ़ते पढ़ते साक्षी जायसवाल प्रकाश का उपयोग करके डेटा स्थानांतरण हेतु वायरलेस संचार तकनीक का आविष्कार करने वाले पहली बालिका बनी। यह उपलब्धि 'गोल्डन बुक ऑफवर्ड रिकॉर्ड' में दर्ज है। साथ ही छत्तीसगढ़ के 12 वर्ष में सबसे कम उम्र में बालिका सांइटिस्ट बनने का वर्ड रिकॉर्ड गोल्डन बुक ऑफ़वर्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करा चुकी हैं। बेटी की इसी उपलब्धि के लिए समाज ने उसे सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किया। आयोजन के संबंध में अखिल भारतीय कलवार कलाल कलार महासभा के राष्ट्रीय महासचिव किशोर भगत ने बताया कि, संस्था की ओर से हर वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले स्वजातीय सेवियों को 'कलचुरी 'कलचुरी गौरव' और 'कलवार श्री' कलाल श्री, व कलार श्री से अवार्ड प्रदान किए जाते हैं। साक्षी जायसवाल को कलचुरी गौरव सम्मान के लिए चयनित कम उम्र में मिली बड़ी उपलब्धियों के चलते किया गया।हम उनकी उज्वल भविष्य की कामना करते हैं ।

बेमेतरा। अखिल भारतीय कलवार, कलाल, कलार महासभा, दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में छत्तीसगढ़ के बेटी कक्षा 11वीं की छात्रा साक्षी जायसवाल को राष्ट्रीय कलचुरी गौरव सर्वोच्च नागरीक सम्मान से नवाजा गया।दिल्ली के हरिमंदिर, गुरुतेग बहादुर नगर में संपन्न इस भव्य राष्ट्रीय अधिवेशन में देश विदेश से आए प्रतिभागियों के बीच कुल 19 व्यक्तियों को इस सर्वोच्च नागरी सम्मान से अलंकृत किया गया।यूपी के कैबिनेट मंत्री रविंद्र जायसवाल के हाथों यह सम्मान दिया गया।साक्षी के पिता पीएल जायसवाल बेमेतरा जिले के डीएवी स्कूल के प्राचार्य है।

भाई पीयूष जायसवाल को भी हासिल है कलचुरी गौरव व बाल वैज्ञानिक का तमगा

साक्षी की भाई पियुष जायसवाल भी कम नही उन्होंने 13 वर्ष के उम्र में वैज्ञानिक होने का वर्ड रिकॉर्ड बना चुका हैं उन्होंने लेखक, व रिसर्चर के रूप में मात्र 13 वर्ष में पी एच डी के सर्टिफिक्रेट प्राप्त करने के साथ अल्बर्ट आइंस्टीन के रिकॉर्ड को तोड़ चुके हैं।

मवेशी खुला छोडने की बात को लेकर प्राणघातक वार करने वाले 4 आरोपी गिरफ्तार

बेमेतरा। प्रार्थीजागेश्वर टंडन उम्र 27 वर्ष निवासी कुम्ही थाना बेरला ने एक लिखित आवेदन पेश कर रिपोर्ट दर्ज कराया कि 24 अगस्त के रात्रि करीबन 08 बजे घर के सामने गौठान के पास में अपने बड़े भाई संतोष टंडन एवं गांव के लोगो के साथ आपस में मवेशी खुला छोडने की बात को लेकर बातचीत करते बैठे थे उसी समय गांव का बल्लू साहू, अपने बडे लड़का गोवर्धन साहू के साथ हम लोगो के सामने पक्की रोड से गुजर रहे थे उसी समय मवेशी की बात को लेकर बल्लू साहू हम लोगो से साथ विवाद करने लगा जिसे साथ में बैठे लोगो के द्वारा समझाने के बाद बल्लू साहू अपने लडका गोवर्धन के साथ अपने घर चला गया कुछ समय बाद बल्लू साहू अपने तीनो लड़का बड़ा लडका गोवर्धन साहू, गोपाल साहू, रवि साहू के साथ आया उस समय बल्लू साहू अपने हाथ में टंगिया रखा था गौठान के पास आकर मुझे एवं मेरे भाई संतोष टंडन को जाति सूचक बोलकर चारो वाद विवाद कर गाली गलौज कर बल्लू साहू के तीनों लड़का धक्का मुक्की करते हुए भाई संतोष टडन को तीनों पकड़े थे और बल्लू साहू अपने हाथ में रखे लोहे के टंगिया से हत्या करने की नियत प्राण घातक हमला किया, जिससे गाल व चेहरा में गंभीर चोट आने से भाई संतोष टडन को ईलाज हेतु मो.सा. से तत्काल शासकीय अस्पताल बेरला लेकर आये जहां डॉक्टर द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद हायर अस्पताल रायपुर रिफर किये है। इस रिपोर्ट पर थाना बेरला में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। घटना की जानकारी वरिष्ठ अधिकारियों को दी गई, जिस पर मामले की गंभीरता को देखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू (भा.पु.से.) के निर्देशानुसार, अति. पुलिस अधीक्षक ज्योति सिंह के मार्गदर्शन में एसडीओपी बेरला विनय कुमार के नेतृत्व में थाना प्रभारी बेरला कृष्णकांत सिंह के साथ थाना स्टाफद्वारा विवेचना कार्य प्रारंभ की गई। प्रकरण में विवेचना के दौरानत्वरित कार्यवाही करते हुए आरोपी घनश्याम ऊर्फ बल्लू साहू से पुछताछ की गई। आरोपी से घटना में प्रयुक्त लोहे का टंगिया को जप्त किया गया। आरोपी1. घनश्याम ऊर्फ बल्लू साहू पिता सालिक राम साहू उम्र 55 वर्ष, 2. गोपाल साहू पिता घनश्याम ऊर्फ बल्लू साहू उम्र 31 वर्ष, 3. नीतेश ऊर्फरवि साहू पिता घनश्याम ऊर्फबल्लू साहू उम्र 25 वर्ष, 4. गोवर्धन साहू पिता घनश्याम ऊर्फ बल्लू उम्र 34 वर्ष सभी निवासी कुम्ही थाना बेरला जिला बेमेतरा को दिनांक 25.08.2025 को विधिवत गिरफ्तार कर आज 26.08.2025 को माननीय न्यायालय में न्यायिक रिमांड पर प्रस्तुत किया गया। इस संपूर्ण कार्यवाही मेंएसडीओपी बेरला विनय कुमार, थाना प्रभारी बेरला निरीक्षक कृष्णकांत सिंह, प्रधान आरक्षक दिनानाथ यादव, गोविंद सिंह, आरक्षक रामेश्वर पटेल, खुशाल बोरकर, सुरेन्द्र जांगडे, घनश्याम मिरे, टेकेन्द्र यादव, भावेश गोश्वामी सहित थाना बेरला के समस्त पुलिस स्टाफ का महत्वपूर्ण एवं सराहनीय योगदान रहा।

तहसील साहू संघ द्वारा 30 को प्रदेशाध्यक्ष का अभिनंदन

लोकार्पण, भूमिपूजन व आमसभा में आयेंगे विधायकगण

डोंगरगांव नगर। छग प्रदेश साहू संघ के प्रदेशाध्यक्ष डॉ नीरेंद्र साहू का तहसील साहू संघ द्वारा 30 अगस्त शनिवार को दोपहर 12 बजे से अभिनंदन समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस मौके पर विधायक दलेश्वर साहू एवं भोलाराम साहू के आतिथ्य में डोम शेड निर्माण का लोकार्पण, पेवर ब्लॉक हेतु भूमिपूजन सहित तहसील साहू संघ की आमसभा आयोजित है। तहसील साहू संघ के सूत्रों के मुताबिक नवनिर्वाचित प्रदेशाध्यक्ष का साहू समाज द्वारा भव्य अभिनंदन किया जायेगा। उक्त अवसर पर समाज के दोनों विधायक दलेश्वर साहू डोंगरगांव विधानसभा तथा भोलाराम साहू खुज्जी विधानसभा विशेष तौर पर सम्मिलित होंगे। इस मौके पर लोकार्पण, भूमिपूजन व आमसभा आयोजित है। तहसील सही संघ द्वारा व्यापक तैयारी की जा रही है।

जीवन रक्षा विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न

महासमुंद। जीवन रक्षा विषय पर विकासखण्ड स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन बागबाहरा में गरिमामय ढंग से सम्पन्न हुआ। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने सड़क सुरक्षा के महत्व पर तार्किक एवं प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सेजेस कोमाखान समूह ने प्रथम, सेजेस बागबाहरा ने द्वितीय तथा हायर सेकंडरी स्कूल बकमा घुंचापाली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) बागबाहरा उमेश कुमार साहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि सड़क दुर्घटनाएँ केवल आँकड़े नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक दुर्घटना किसी परिवार के सपनों का टूटना और जीवन की पीड़ा है। भारत में सड़क सुरक्षा एक गंभीर चुनौती है और इसका समाधान तभी संभव है जब हर नागरिक स्वयं जिम्मेदारी लेते हुए यातायात नियमों का पालन करे। हेलमेट, सीट बेल्ट, ट्रैफिक सिग्नल और गति सीमा केवल औपचारिकताएँ नहीं, बल्कि जीवन रक्षा के कवच हैं। युवा पीढ़ी को आगे आकर समाज में जागरूकता फैलानी होगी और स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। आज की प्रतियोगिता में छात्रों ने जिस गंभीरता से अपने विचार रखे, वह दर्शाता है कि हमारी नई पीढ़ी परिवर्तन लाने के लिए तैयार है। थाना प्रभारी नितेश सिंह ने कहा कि पुलिस का उद्देश्य चालान काटना नहीं, बल्कि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। हम चाहते हैं कि हर नागरिक सड़क पर स्वयं अनुशासित रहे। हेलमेट और सीट बेल्ट जीवन के रक्षक कवच हैं, जिन्हें किसी भी परिस्थिति में नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। सड़क सुरक्षा नियमों का पालन स्वयं करना और दूसरों को प्रेरित करना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। छोटे-छोटे कदम ही बड़ी दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं। इस अवसर पर तहसीलदार हरीशकान्त ध्रुव, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी के.के. वर्मा, तथा सहायक विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी रामता डे भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में नोडल अधिकारी हीरा सिंह नायक, प्राचार्य सेजेस कोमाखान तथा शिक्षक गण विजय शर्मा, देवानन्द वेदव्यास, मनीष अवसरिया, भूपेंद्र निराला, गेंदलाल यादव, हीरेन्द्र देवांगन, निर्णायक अजय अग्रवाल, मन्नू कुर्रे, हरीश चौहान, कुमत राम ध्रुव, नितिन जैन हीरेन्द्र उपाध्याय सहित विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। निर्णायक मंडल द्वारा निष्पक्ष निर्णय देकर विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का वातावरण उत्साह, प्रेरणा और जागरूकता से परिपूर्ण रहा।

कार्यक्रम में उपस्थित जनों ने संकल्प लिया कि सड़क सुरक्षा ही जीवन रक्षा है और इसे अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएँगे।

अखंड सुहाग के लिए महिलाओं ने रखा निर्जला व्रत रातभर महादेव व पार्वती की मिलकर की आराधना

सरायपाली। सरायपाली तीज का पर्व नगर सहित अंचल में धूमधाम से मनाया गया। जहां विवाहिता स्त्रियों ने अपने पति की दीर्घायु और परिवार की सुख समृद्धि के लिए तीज व्रत रखा, वहीं कुंवारी लड़कियों ने अच्छे जीवनसाथी की कामना के लिए व्रत रखा। इस बार तीज व्रत चार विशिष्ट योगों सर्वार्थसिद्धि, शोभन, गजकेसरी और पंचमहापुरुष योग का अद्भुत संयोग में मनाया गया। इस योग में पूजा करने से शत प्रतिशत मनोकमनाएं पूरी होने की बात कही गई। हरतालिका तीज पर माता पार्वती ने भगवान शिव के लिए यह व्रत रखा था तभी से हरतालिका तीज का चलन महिलाओं में ज्यादा बढ़ गया है। वैसे तो महिलाओं में व्रतों का दौर पूरे वर्ष चलता रहता है, लेकिन भादों महीने में मनाई जाने वाली हरतालिका तीज इन सभी पर्वों में प्रमुख एवं कठिन मानी जाती है। तीज तिथि शुरू होने से लेकर व्रतधारियों का निर्जला व्रत प्रारंभ हो गया था। रात्रि 12 बजे से व्रतधारियों ने एक बूंद पानी भी नहीं पिया। सुबह से ही शिवमंदिरों में महिलाओं और कन्याओं का पहुंचना शुरू हो गया। महिलाओं ने भगवान भोलेनाथ और माता पार्वती की पूजा की। महिलाओं ने फुलहरा सजा कर पूरी रात भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा कर परिवार और पति की लंबी आयु के लिए प्रार्थना को। रात्रि तीन बजे से लेकर सुबह पांच बजे तक स्नान कर भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन आरती कर नदी, तालाब के घाटों पर फुलहरा विसर्जित किया। सुबह पूजा पाठ करने के बाद ही व्रतधारियों ने पानी पी।

पुलिस ने 18 प्रकरण में 6,400 रूपये समन शुल्क एवं 25 प्रकरण न्यायालय में किया पेश

बेमेतरा। जिले में अपराध नियंत्रण एवं कानून व्यवस्था सुदृढ़ करने हेतू विशेष चेकिंग पाईट लगाकर शाम 06 बजे से रात्रि 09 बजे तक दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों की चेकिंग कर चाकु या हथियार लेकर चलने वालो, नाबालिक वाहन चालक एवं तीन सवारी, तेजगति और शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर कार्यवाही करने के लिए 26 अगस्त 2025 को दो जगहों पुलिस चौकी देवरबीजा के सामने एवं पिरदा चौक भिंभौरी कंडरका में वाहन चेकिंग पाईट लगाकर वाहनों की चेकिंग कार्यवाही किया गया। जिसमें पुलिस चौकी देवरबीजा के सामने में पुलिस अनुविभागीय अधिकारी बेमेतरा मनोज तिर्की एवं पिरदा चौक भिंभौरी कंडरका में पुलिस अनुविभागीय अधिकारी बेरला विनय कुमार के नेतृत्व में चौकी कंडरका प्रभारी उप निरीक्षक राजकुमार साहू एवं पुलिस चौकी प्रभारी देवरबीजा सहायक उप निरीक्षक रेशमलाल भास्कर एवं अन्य 28 अधिकारी /कर्मचारियों ने जिले के पुलिस चौकी देवरबीजा के सामने एवं पिरदा चौक भिंभौरी कंडरका में वाहन चेकिंग पाईट लगाकर वाहनों की चेकिंग कर पुलिस चौकी देवरबीजा के सामने में चौकी देवरबीजा स्टाफ द्वारा 70 वाहनों की चेकिंग, 11 प्रकरण मौके पर कागजात पेश नहीं करना एवं पिरदा चौक भिंभौरी में चौकी कंडरका स्टाफ द्वारा 46 वाहनों की चेकिंग कर 11 प्रकरण मौके पर कागजात पेश नहीं करन पर मोटर व्हीकल एक्ट के तहत चालानी कार्यवाही की गई। जिसमें 26 अगस्त 2025 को थाना परपोडी 14 चालान में 14 वाहन चालक, चौकी कंडरका 11 चालान में 11 वाहन चालक, चौकी देवरबीजा 11 चालान में 11 वाहन चालक, चौकी संबलपुर 01 चालान में 01 वाहन चालक, यातायात बेमेतरा 06 चालान में 06 वाहन चालक, कुल 43 वाहन चालको के विरूद्ध चालानी कार्यवाही किया गया। जिसमें 25 प्रकरण न्यायालय पेश किया गया एवं अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालको के विरूद्ध 18 प्रकरण में 6,400/- रूपये समन शुल्क लिया गया। चौक-चौराहो में विशेष चेकिंग पाईट लगाकर आकस्मिक वाहन चेकिंग कर, चाकु या हथियार लेकर चलने वालो, नाबालिक वाहन चालक एवं तीन सवारी, तेजगति और वाहन चालकों की ब्रिथनलाइजर से जांच की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे शराब पीकर गाड़ी नहीं चला रहे हैं। इस दौरान ब्रिथनलाइजर औरसशक्त एप÷ (एप्लिकेशन) के माध्यम से चौकी देवरबीजा में 70 वाहन, चौकी कंडरका में 46 वाहन, कुल 116 वाहनो की चेकिंग की गई।

बेमेतरा पुलिस आम नागरिको से अपील करता है कि यातायात नियमों का पालन करे, पीकअप, मालवाहक वाहन में सवारी न बैठाये, संयमित गति से वाहन चलाये, शराब सेवन कर वाहन न चलाये, मोटर सायकल में मोडिफाइड साइलेंसर न लगाये, अपने नाबालिक बच्चों को वाहन चलाने न देवे, बिना नंबर के वाहन न चलाएं। वाहन चलाते समय सीट बेल्ट एवं हेलमेट अवश्य लगावें। वाहन चलाते समय मोबाईल का उपयोग न करें। बेमेतरा पुलिस आपकी सहायता के लिये है।

रत्नाबांधा चौक से हाउसिंग बोर्ड मोड़ तक 19 दुकानदारों पर निगम की कार्रवाई

धमतरी। नगर पालिक निगम धमतरी द्वारा शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखने के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में निगम की स्वच्छता टीम ने रत्नाबांधा चौक से हाउसिंग बोर्ड मोड़ तक क्षेत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान दुकानों के सामने गंदगी फैलाए जाने तथा निर्धारित स्थान पर कचरा न डालने की शिकायतें पाई गई। नियमों का उल्लंघन करते पाए जाने पर निगम टीम ने 19 दुकानदारों के विरुद्ध कार्यवाही की और उनसे कुल 5700 रुपए का जुर्माना वसूला गया। इस दौरान दुकानदारों को भविष्य में गंदगी न फैलाने और अपने.अपने प्रतिष्ठानों के सामने साफ सफाई बनाए रखने की सख्त हिदायत दी गई। साथ ही यह भी समझाइश दी गई कि कचरा हमेशा निगम के कचरा वाहन में ही डालें तथा सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी न फैलाएं। नगर निगम आयुक्त प्रिया गोयल ने स्पष्ट किया है कि शहर की स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

थाना खरोरा पुलिस ने अवैध शराब के साथ आरोपी को किया गिरफ्तार

रायपुर। आरोपी के कब्जे से 35 पौवा शोले देशी मदिरा मशाला शराब किया गया जप्त। थाना खरोरा जिला-रायपुर। अप.क्र.579/25 धारा:- 34(2) आबकारी एक्ट। नाम पता आरोपी:- धन्नू विश्वकर्मा पिता साधूराम विश्वकर्मा उम्र 42 साल साकिन भड़हा थाना खरोरा जिला रायपुर जप्त मशरूका:- 35 पौवा देशी मदिरा मसाला शोले जिसके प्रत्येक पौवा में 180-180 मि.ली. शराब भरी हुई जुमला मात्रा 06 लीटर 300 मि.ली. किमती 3500। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डां. लाल उमेंद सिंह के दिशा निर्देश पर एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक(ग्रामीण) कीर्तन राठौर के मार्गदर्शन में तथा नगर पुलिस अधीक्षक (विधानसभा) वीरेन्द्र चतुर्वेदी के पर्यवेक्षण में में थाना प्रभारी खरोरा के नेतृत्व में आबकारी एक्ट में गिरफ्तार किया गया है। इस प्रकार है कि दिनांक 25/08/25 को जरिए मुखबीर से सूचना मिला कि ग्राम भड़हा का धन्नू विश्वकर्मा एक सफेद प्लास्टिक बोरी में अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री करने हेतु ग्राम केशला से नवागांव मोड़ देवांगन आरा मील के पास खड़ा है कि जिस पर सूचना के तस्दीक हेतु थाना खरोरा पुलिस पार्टी गवाहों के साथ रवाना होकर मुखबीर द्वारा बताये स्थान पर रेड कार्यवाही कर आरोपी धन्नू विश्वकर्मा को एक सफेद रंग की प्लास्टिक बोरी में अवैध रूप से शराब रखे हुए पकड़ा गया। आरोपी को शराब रखने के संबंध में कागजात पेश करने नोटिस दिया गया जो कोई कागजात पेश नही करने पर आरोपी के कब्जे से एक सफेद रंग की प्लास्टिक बोरी में रखे कुल 35 पौवा देशी मदिरा मसाला शोले जिसके प्रत्येक पौवा में 180-180 मि.ली. शराब भरी हुई जुमला मात्रा 06 लीटर 300 मि.ली. किमती 3500/ को गवाहो के समक्ष जप्त किया गया है। आरोपी के विरूध्द अपराध घटित करना साक्ष्य पाये जाने से विधिवत् गिरफ्तार कर सूचना परिजनों को देकर न्यायिक रिमाण्ड पर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। गिरफ्तार आरोपी:- धन्नू विश्वकर्मा पिता साधूराम विश्वकर्मा उम्र 42 साल साकिन भड़हा थाना खरोरा जिला रायपुर

सुषमा के स्नेहिल सृजन को मिली विशिष्ट पहचान

रायपुर। साहित्यिक जगत में अपनी अनवरत रचनाशीलता और सृजन-साधना के लिए चर्चित कवियित्री सुषमा-प्रेम पटेल को साहित्य सृजन काव्य रत्न सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें साहित्य सृजन संस्थान के चतुर्थ स्थापना दिवस के पावन अवसर पर आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह में प्रदान किया गया। सुषमा प्रेम पटेल ने प्रतिदिन घनाक्षरी छंद प्रेषित कर साहित्यिक क्षितिज पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उनके इस समर्पण और निरंतरता ने उन्हें साहित्यिक बिरादरी में एक अलग स्थान दिलाया है। सम्मान प्राप्त करने के उपरांत उन्होंने माँ शारदे के श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि यह सम्मान मेरे सृजन-पथ की प्रेरणा है। बीते वर्षों में मैंने प्रतिवर्ष 365 दिन नि:स्वार्थ भाव से रचनात्मक योगदान दिया है। यह यात्रा माँ शारदे की कृपा और साहित्य सृजन परिवार के स्नेह से ही संभव हो पाई।

भगवान की मूर्तियों में तोड़ फोड़ करने वाला गिरफ्तार

रायपुर। जिले के ग्राम मुंडा में तालाब पार में स्थापित भगवान की मूर्तियों में तोड़फोड़ कर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले आरोपी को लवण पुलिस ने गिरफ्तार किया है। थाना लवन पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए रिपोर्ट के आधा घंटे बता दें कि दिनांक 24.08.2025 को सूचना मिली कि ग्राम मुंडा में आरोपी कमलेश्वर वर्मा द्वारा ग्राम के कोर्रा तालाब पर में स्थापित भगवान शनिदेव, महादेव एवं बजरंगबली की मूर्ति एवं भगवान नंदी की मूर्ति में तोड़फोड़ कर दिया गया है, जिससे ग्रामवासियों के धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचा है। कि रिपोर्ट पर थाना लवन पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए दिनांक 24.08.2025 को ही धारा 196(2),298 बीएनएस का प्रकरण पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण में पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता के कुशल निर्देशन में थाना लवन पुलिस द्वारा तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी कमलेश्वर वर्मा उम्र 39 साल निवासी ग्राम मुंडा थाना लवन को घटना दिनांक 24.08.2025 को ही हिरासत में लिया गया, जिससे पूछताछ करने पर आरोपी द्वारा भगवान की मूर्तियों में तोड़फोड़ करना स्वीकार किया गया।

एक्टीवा व बाईक में जबरदस्त भिड़ंत,एक की मौत,चार घायल

रायपुर। जिले की सोमनी थानाक्षेत्र के ग्राम फुलझर के पास एक्टीवा व मोटरसाइकिल में हुई जबरदस्त भिड़ंत में एक की मौत हो गई वहीं 4 लोग घायल हो गये।मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 24.08.2025 को शिवचरण निषाद अपने साथी रिखीराम यादव के साथ एक्टीवा क्रमांक सीजी 08 एलवाई 6179 से टेडेसरा से मुढीपार की ओर तेज गति से जा रहे थे, एवं मोसा क्रमांक सीजी 07 एलटी 2172 में तीन लोग सवार होकर मुढीपार से टेडेसरा की ओर जा रहे थे कि ग्राम फुलझर के पास मोसा व एक्टीवा के मध्य जबरदस्त भिडत हो जाने से शिवचरण निषाद पिता स्व. लतखोर उम्र 46 साल निवासी ग्राम मुढीपार थाना सोमनी राजनांदगांव के सिर में गंभीर चोट आने से मृत्यु हो गइ।

सियोल में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और एटीसीए प्रतिनिधिमंडल की महत्वपूर्ण भेंट

छत्तीसगढ़ में निवेश की संभावनाओं पर हुई चर्चा-मुख्यमंत्री साय

- छत्तीसगढ़ औद्योगिक नीति 2024-30 के अंतर्गत आईसीसीके के साथ होगा ज्ञान व निवेश सहयोग

रायपुर/ संवाददाता

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अपने दक्षिण कोरिया प्रवास के दौरान सियोल में एडवांस्ड टेक्नोलॉजी सेंटर एसोसिएशन के चेयरमैन श्री ली जे जेंग एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की। एटीसीए एक सशक्त औद्योगिक नेटवर्क है, जिसमें आईटी, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, फार्मा और टेक्सटाइल क्षेत्र की 60 से अधिक प्रमुख कंपनियाँ शामिल हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने एटीसीए प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार निवेशकों के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने श्री ली जे जेंग और उनके साथ आए वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित किया कि वे अपने आगामी भारत दौरे के दौरान छत्तीसगढ़ अवश्य आएँ और राज्य में उपलब्ध निवेश व सहयोग की संभावनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन करें। एटीसीए ने छत्तीसगढ़ की कंपनियों के साथ बी2बी साझेदारी में रुचि दिखाई है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में आईआईटी, आईआईएम, एनआईटी और एम्स जैसे राष्ट्रीय संस्थान मौजूद हैं, जो विश्वस्तरीय प्रतिभा उपलब्ध कराते हैं। राज्य का 'प्लग एंड प्ले' इंफ्रास्ट्रक्चर और सशक्त लॉजिस्टिक्स नेटवर्क छत्तीसगढ़ को एटीसीए के अनुसंधान एवं विकास केंद्रों और भारत में उनके विस्तार का स्वाभाविक हब बनाता है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ तेजी से विकसित हो रहा है और यहाँ उद्योग-अनुकूल नीतियाँ, प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, कुशल मानव संसाधन तथा मज़बूत बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि आईटी, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, फार्मा और टेक्सटाइल जैसे उभरते क्षेत्रों में एटीसीए कंपनियाँ यहाँ आकर निवेश करें और साझेदारी के नए आयाम स्थापित करें। इससे प्रदेश के युवाओं को बड़े पैमाने पर रोज़गार मिलेगा और स्थानीय उद्योगों को भी नई ताक़त मिलेगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अपने दक्षिण कोरिया प्रवास के दौरान सियोल में आयोजित छत्तीसगढ़ इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रम में भाग लिया, जिसका आयोजन इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स इन कोरिया के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ दक्षिण कोरियाई कंपनियों के लिए असीम संभावनाओं की धरती है। उन्होंने उल्लेख किया कि दक्षिण कोरिया भारत के शीर्ष तीन इस्पात निर्यात गंतव्यों में शामिल है और छत्तीसगढ़, देश का अग्रणी इस्पात उत्पादक राज्य होने के नाते, इस सहयोग को और गहरा करने तथा निवेश के नए अवसर प्रदान करने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ खनिज संसाधनों से समृद्ध है, जो ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। राज्य में प्रचुर मात्रा में लिथियम उपलब्ध है, जो ईवी (इलेक्ट्रिक व्हीकल) क्रांति और नई पीढ़ी के उद्योगों को गति देने में सहायक होगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ वैश्विक ऊर्जा संक्रमण का स्वाभाविक केंद्र बन सकता है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने आईसीसीके को नॉलेज पार्टनर के रूप में शामिल करने की घोषणा करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ औद्योगिक नीति 2024-30 के तहत तकनीक, स्किलिंग और वैश्विक सहयोग को एक नई दिशा दी जाएगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कोरिया की नवाचार क्षमता और छत्तीसगढ़ के संसाधनों के मिलन से विकास का एक नया युग लिखा जाएगा। मुख्यमंत्री ने यह भी रेखांकित किया कि छत्तीसगढ़ सरकार प्रत्येक निवेशक को सिंगल विंडो क्लियरेंस से लेकर भूमि आवंटन, आवश्यक अनुमतियों और सहयोगी नीतियों तक हर स्तर पर सहयोग प्रदान कर रही है।

ड्रग्स एमडीएमए के साथ अंतर्राज्यीय सहित कुल तीन आरोपी गिरफ्तार.....

रायपुर। संवाददाता

थाना गंज क्षेत्रांतर्गत देवेन्द्र नगर ओव्हर ब्रीज के नीचे रेलवे स्टेशन जाने वाली रोड पास आरोपियों को ड्रग्स (एमडीएमए) के साथ पकड़ा गया रंगे हाथ। आरोपी मोनू विश्नोई है मूलत: हिसार हरियाणा का निवासी। आरोपियों के कब्जे से कुल 27.58 ग्राम ड्रग्स (एमडीएमए) सहित सोनेट कार, नगदी रकम, तौल मशीन एवं मोबाईल फोन किया गया है जप्त। जप्त मशरूका की कुल कीमत है लगभग 20,00,000/- रूपये। आरोपियों के विरूद्ध थाना गंज में अपराध क्रमांक 222/25 धारा 21(सी), 29 नारकोटिक एक्ट का अपराध किया गया है पंजीबद्ध। प्रकरण में फॉरवर्ड एवं बैकवर्ड लिंकेजेस के आधार पर अन्य आरोपियों के संबंध में की जा रहीं है विस्तृत पूछताछ। एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना गंज पुलिस टीम की संयुक्त कार्यवाही। विवरण - पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज रायपुर श्री अमरेश मिश्रा तथा पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा नशे के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करते हुए अंतर्राज्यीय सप्लायरों व स्थानीय नेटवर्क के गठजोड़ को समाप्त करने के निर्देश दिये गये थे। इसी तारतम्य में दिनांक 23.08.25 को एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट की टीम को सूचना प्राप्त हुई कि थाना गंज क्षेत्रांतर्गत देवेन्द्र नगर ओव्हर ब्रीज के नीचे रेलवे स्टेशन जाने वाली रोड पास चारपहिया वाहन कार में सवार कुछ व्यक्ति अपने पास ड्रग्स (एमडीएमए) रखें है तथा बिक्री करने की फिराक में है। जिस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर श्री लखन पटले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक क्राईम श्री संदीप मित्तल, उप पुलिस अधीक्षक क्राईम श्री संजय सिंह एवं नगर पुलिस अधीक्षक कोतवाली श्री केशरी नंदन नायक द्वारा प्रभारी एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना प्रभारी गंज को सूचना की तस्दीक कर आरोपियों को ड्रग्स (एमडीएमए) के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार करने हेतु निर्देशित किया गया। जिस पर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना गंज पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा उक्त स्थान जाकर मुखबीर द्वारा बताये चारपहिया वाहन सोनेट कार को चिन्हांकित किया गया।

रायपुर में आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस आधारित कार्यशाला का सफल आयोजन किया

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना की रजत जयंती वर्षगांठ के उपलक्ष्य में चल रहे छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव के अंतर्गत, आज रायपुर में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा एक विशेष कार्यशाला एआई आधारित कार्यशाला ङ्क नवाचार की ओर एक कदम, एआई के संग का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला रायपुर कलेक्टोरेट परिसर स्थित रेड क्रॉस सभा कक्ष में आयोजित की गई, जिसमें प्रोजेक्ट उदघोष टीम के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था। आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस के माध्यम से सरकारी योजनाओं और कार्यों को अधिक प्रभावी व आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने की तकनीकी जानकारी प्रदान करना। कार्यशाला में,द्ब विशेषज्ञ श्री नितेश सिन्हा।

उद्योग मंत्री का प्रयास रंग लाया

जमीन मिलते ही उद्योग विभाग पार्क बनाने शुरू करेगा तैयारी

- ज़मीन हस्तांतरित हेतु जनरेशन कंपनी की बोर्ड से मिली हरी झंडी
- कोरबा ताप विद्युत गृह की 105 हेक्टेयर ज़मीन उद्योग विभाग को जल्द होगी हस्तांतरित

रायपुर/ संवाददाता

कोरबा को व्यावसायिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के दिशा में नगर विधायक कोरबा वाणिज्य, उद्योग, सार्वजनिक उपक्रम और आबकारी, श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन के प्रयासों से बहुप्रतीक्षित एल्युमिनियम पार्क का मार्ग प्रशस्त हो गया है। उत्पादन कंपनी के बोर्ड की हुई बैठक में पूर्व सयंत्र के ज़मीन हस्तांतरित हेतु हरी झंडी मिल गई है। कोहड़िया स्थित कोरबा ताप विद्युत गृह की 105 हेक्टेयर ज़मीन उद्योग विभाग को अब जल्द हस्तांतरित की जाएगी। इसके लिए बोर्ड ने प्रबंध निदेशक को अधिकृत किया है। साथ ही जिला प्रशासन, नजुल, राजस्व विभाग को ज़मीन का सत्यापन एवं सीमांकन कर उद्योग विभाग को हस्ताँतरित करने के लिए ऊर्जा विभाग द्वारा नजूल अधिकारी को पत्र जारी किया गया है। कोरबा ज़िले में एल्यूमिनियम पार्क निर्माण हेतु उद्योग मंत्री के प्रस्ताव पर वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिये उद्योग विभाग के बजट प्रस्ताव में 5 करोड़ रुपए का घोषणा की गई थी। इसके बाद उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने ही उत्पादन कम्पनी के बंद पड़ी प्लांट की ज़मीन में एल्यूमिनियम पार्क हेतु प्रस्ताव ऊर्जा विभाग और उद्योग विभाग को दिया था।

राज्य सरकार की प्रतिबद्धता, खेलों के लिए बुनियादी ढांचा होगा सुदृढ़

- धमतरी और कुरूद को मल्टीपर्पज इंडोर स्पोर्ट्स की सौगात

रायपुर/ संवाददाता

छत्तीसगढ़ सरकार ने एक बार फिर खेल सुविधाओं में इजाफा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। खिलाड़ियों को आधुनिक संसाधन उपलब्ध कराने, खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने और उत्कृष्ट प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए सरकार सतत प्रयासरत है। इसी कड़ी में धमतरी और कुरूद में इंडोर बैडमिंटन हॉल / मल्टीपर्पज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के निर्माण हेतु प्रशासनिक स्वीकृति मिली है। क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत खेल बुनियादी ढांचे का विस्तार और खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में राज्य सरकार कई महत्त्वपूर्ण पहल कर रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने खेलों को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास, प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन योजनाओं पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। ओलंपिक जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को 1 से 3 करोड़ रुपये तक की पुरस्कार राशि देने की योजना सरकार की प्रतिबद्धता का परिचायक है। यह पहल न केवल खिलाड़ियों के मनोबल को ऊँचा करती है बल्कि आने वाली नई पीढ़ी को भी खेलों की ओर प्रेरित करती है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना के तहत मैदानों का उन्नयन, उच्च स्तरीय उपकरणों की उपलब्धता, खेल क्लबों को आर्थिक सहायता और पारंपरिक खेलों के आयोजन जैसी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। कलेक्टर धमतरी ने बताया कि जिले के धमतरी और कुरूद में इंडोर बैडमिंटन हॉल / मल्टीपर्पज स्पोर्ट्स हॉल के प्रोजेक्ट के लिए लगभग 5-5 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। यहां खिलाड़ियों के लिए विभिन्न इनडोर खेलों की आधुनिक सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी, जिनमें बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज, लूडो एवं साँप-सीढ़ी, डार्ट बोर्ड, स्नूकर, तीरंदाजी, योग कक्ष, स्क्वॉश, बास्केटबॉल, पिकलबॉल प्रमुख हैं। सबसे अहम यह है कि इन खेलों के लिए आवश्यक उपकरण और संरचनाएं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होंगी।

ओसाका इन्वेस्टर कनेक्ट छत्तीसगढ़ ने जीता निवेशकों का भरोसा-सीएम साय

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अपने जापान प्रवास के दौरान ओसाका में आयोजित प्रतिष्ठित इन्वेस्टर कनेक्ट कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संसाधनों, प्रतिभाशाली मानवबल और उद्योग-अनुकूल नीतियों का सशक्त संगम है। उन्होंने रेखांकित किया कि भारत और जापान विश्वास एवं साझा मूल्यों की गहरी डोर से जुड़े हैं। मुख्यमंत्री ने जापानी साझेदारों से आह्वान किया कि वे नवाचार, अवसर और साझा समृद्धि से आगे बढ़ रही छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में भागीदार बनें। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने सरताज फूड्स, ओसाका को छत्तीसगढ़ में फूड प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने के लिए 11.45 मिलियन डॉलर (100 करोड़) का निवेश प्रस्ताव दिया। यह परियोजना राज्य के फूड प्रोसेसिंग क्षेत्र को नई ऊँचाई देगी, बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन करेगी और किसानों को नए अवसर प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस पहल से छत्तीसगढ़ की कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। बिजनेस-टू-गवर्नमेंट बैठकों के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री साय ने मोराबु हंशिन कंपनी के प्रेसिडेंट एवं रिप्रेजेंटेटिव डायरेक्टर श्री नाओयुकी शिमाडा से भी भेंट की।

श्रीमती पार्वती पटेल का एक कच्चे घर से पक्के घर तक का सफर

- अब उन्हें बरसात का डर नहीं है, वे आत्मविश्वास से पक्के मकान में खुशी-खुशी परिवार के साथ निवास कर रही
- पार्वती बताती हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना हमारे जैसे गरीबों के लिए किसी वरदान से कम नहीं

रायपुर/ संवाददाता

प्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ उठाकर हितग्राही अपने पक्के घर का सपना साकार कर रहे हैं। ऐसी ही एक हितग्राही नारायणपुर जिले की निवासी श्रीमती पार्वती पटेल अपने परिवार के साथ वर्षों से एक कच्चे मकान में रह रही थीं। बरसात के मौसम में टपकती छत और मिट्टी की दीवारें उनके जीवन की रोजमर्रा की कठिनाइयों को और बढ़ा देती थीं। पार्वती की आय का एकमात्र स्रोत सब्जी बेचने का छोटा व्यवसाय था, जिससे परिवार का गुज़ारा मुश्किल से हो पाता था। आर्थिक तंगी के चलते वे कभी भी पक्का घर बनवाने की सोच नहीं सकीं। लेकिन 2023 में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में हुई पहली कैबिनेट बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 18 लाख मकानों को स्वीकृति दी गई। इसी के तहत् मोर जमीन मोर मकान अभियान शुरू किया गया, जो पार्वती के लिए एक नई उम्मीद लेकर आया। नगरपालिका परिषद कार्यालय की सक्रिय भूमिका से उन्हें योजना में पंजीकृत किया गया। योजना के तहत केंद्रांश, राज्यांश और हितग्राही अंशदान के माध्यम से मकान निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया सरल और पारदर्शी रही। कुछ ही महीनों में उनका पक्का मकान बनकर तैयार हो गया। आज पार्वती पटेल अपने परिवार के साथ अपने नए पक्के घर में सुरक्षित, ससम्मान और खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रही हैं। अब उन्हें बरसात का डर नहीं है, वे आत्मविश्वास से पक्के मकान में खुशी-खुशी परिवार के साथ निवास कर रही हैं। पार्वती बताती हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना हमारे जैसे गरीबों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह योजना हमें सिर्फ छत ही नहीं देती, बल्कि आत्मसम्मान और सुरक्षा की भावना भी देती है। मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की आभारी हूँ, जिन्होंने हमारे सपनों को साकार किया है।

प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने किया निरीक्षण

नवा रायपुर में आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर निर्माणाधीन जीवंत संग्रहालय पूर्णत: की ओर....

- राज्योत्सव पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी करेंगे संग्रहालय का उदघाटन
- संग्रहालय होगा आदिवासी गौरव, शौर्य एवं बलिदान का प्रतीक

रायपुर/ संवाददाता

आदिम जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा ने नवा रायपुर स्थित आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, परिसर में निर्माणाधीन शहीद वीर नारायण सिंह आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय का निरीक्षण कर अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। अधिकारियों ने बताया कि संग्रहालय निर्माण का कार्य लगभग पूर्णत: की ओर है। अंतिम फिनिशिंग एवं रंग रोगन का कार्य चल रहा हैं। गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ के आदिवासी स्वंत्रंता संग्राम सेनानियों पर बन रहे इस जीवंत संग्रहलय का उदघाटन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर रजत जयंती एवं जनजातीय गौरव दिवस के मौके पर किया जाना प्रस्तावित है। प्रमुख सचिव श्री बोरा ने इसकी तैयारी के लिए निर्माण कार्य में लगे अधिकारियों की बैठक ली एवम आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि संग्रहालय के निर्माण कार्य में लगने वाली प्रत्येक सामग्री उच्च गुणवत्तायुक्त एवं सभी मानकों पर खरी उतरनी चाहिए। साथ ही संग्रहालय के निर्माण में किसी भी प्रकार की कोई वित्तीय अनियमितता ना हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि शहीद वीर नारायण सिंह संग्रहालय में स्वतंत्रता आंदोलन के समय छत्तीसगढ़ में हुए विभिन्न आदिवासी विद्रोहों जैसे हल्बा विद्रोह, सरगुजा विद्रोह, भोपालपट्टनम विद्रोह, परलकोट विद्रोह, तारापुर विद्रोह, लिंगागिरी विद्रोह, कोई विद्रोह, मेरिया विद्रोह, मुरिया विद्रोह, रानी चैरिस विद्रोह, भूमकाल विद्रोह, सोनाखान विद्रोह, झण्डा सत्याग्रह एवं जंगल सत्याग्रह के वीर आदिवासी नायकों के संघर्ष (1923, 1920) एवं शौर्य के दृश्य का जीवंत प्रदर्शन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि निश्चित ही यह संग्रहालय सभी वर्ग के लोगों के लिए एक आकर्षण का केन्द्र एवं प्रेरणास्त्रोत के रूप में बनकर उभरेगा।

संपादकीय

पैसों से जुड़े ऑनलाइन खेलों की काली दुनिया

इसमें कोई दोराय नहीं कि इंटरनेट के विस्तार के मौजूदा दौर में शायद ही कोई क्षेत्र बचा है, जिसमें इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण नहीं हो गई हो। मगर जितने व्यापक स्तर पर इसके सकारात्मक उपयोग का दायरा बढ़ा है, उसी के समांतर कुछ ऐसे क्षेत्र भी अपने पांव फैला रहे हैं, जो न केवल सामाजिक ढांचे को और आर्थिक रूप से नुकसान पहुंचा रहे हैं, बल्कि बड़ी संख्या में लोग मनोवैज्ञानिक रूप से भी बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं।'ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' यानी धन आधारित ऑनलाइन खेल एक ऐसा ही चलन है, जिसने अब मनोरंजन की सीमा को पार करते हुए पैसे कमाने के लालच से उपजी लत और आर्थिक नुकसान का जटिल स्वरूप ग्रहण कर लिया है। भारी तादाद में लोग इसके जाल में फंस रहे हैं और अपनी मेहनत की कमाई गंवा रहे हैं। इसे लेकर पिछले काफी समय से चिंता जताई जा रही है, लेकिन सरकार ने इस पर लगाम लगाने या इसे विनियमित करने के बजाय इसके दूरगामी असर की अनदेखी की। इसके नतीजे अब खुल कर सबके सामने आ रहे हैं और चिंता की वजह बन रहे हैं। इसकी वजह से होने वाले नुकसान का दायरा व्यापक होते जाने के बाद अब जाकर खुद सरकार ने भी माना है कि 'ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' समाज के लिए एक बड़ी समस्या बन चुकी है और इस पर लगाम लगाना वक्त की जरूरत है। अनुमान यह लगाया गया है कि धन-आधारित ऑनलाइन खेलों के चक्कर में करीब पैंतालीस करोड़ लोग हर वर्ष लगभग बीस हजार करोड़ रुपए गंवा देते हैं।इसकी लत की वजह से अब तक सैकड़ों परिवार आर्थिक रूप से बर्बाद हो चुके हैं। त्रासद पक्ष यह भी है कि इस लत की वजह से ऑनलाइन खेलों के जरिए लोग पैसे कमाने की भूख में लगातार हारते जाते हैं और बाद में कई लोग आत्महत्या और हिंसा जैसा गंभीर कदम भी उठा लेते हैं। इसके नुकसानों को लेकर चिंता पहले भी जताई जाती रही है, अब देर से सही, लेकिन सरकार ने गेमिंग उद्योग के एक हिस्से से मिलने वाले राजस्व के सवाल को फिलहाल पीछे छोड़ते हुए समाज कल्याण को प्राथमिकता देना तय किया है। इस क्रम में ऑनलाइन गेम को विनियमित करने एवं शैक्षिक और सामाजिक आनलाइन खेलों को बढ़ावा देने वाले एक विधेयक को लोकसभा में पारित कर दिया गया है।सही है कि सरकार आज धन आधारित ऑनलाइन गेमिंग को एक बड़ी बुराई बताते हुए इससे बचने की जरूरत बता रही है, मगर अफसोस की बात यह है कि जब ऐसे कथित खेल लोगों के बीच अपनी जगह बना रहे थे, उन्हें समाज से काट रहे थे और इसके बहुस्तरीय नकारात्मक नतीजे सामने आने लगे थे, तब इसके प्रति जताई जाने वाली फिक्र की अनदेखी की गई।अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि खुद सरकार ने 2023 में पैसे से जुड़े ऑनलाइन गेमिंग पर अट्ठाईस फीसद जीएसटी भी लगाया था।

इलीट लोगों के क्लब लगने वाली कांग्रेस पार्टी एक मॉस आर्गनाइजेशन में बदल जाती है। जवाहरल लाल नेहरू ने गांधी जी का जिक्र करते हुए इसमें बताया है कि गांधी जी ने सबसे बड़ा बदलाव जो भारतीय राजनीति में किया वो ये था कि उन्होंने लोगों के मन में जो खौफ था। अंग्रेजी साम्राज्य को लेकर जो डर था। गांधी ने मनोवैज्ञानिक स्तर पर और लोगों के मानस में एक बड़ा बदलाव किया। अंग्रेजों के डर को खत्म कर दिया। उन्होंने लोगों को अभय की बात सिखाई। अभय मतलब जिसको भय नहीं है। जुलाई 2024 को राहुल गांधी ने देश की संसद में खड़े होकर राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान अभय मुद्रा का बार बार जिक्र किया। शिव की तस्वीर में और कांग्रेस का चुनाव चिह्न अभय मुद्रा है और ये निडर रहने की बात करता है।

मुझे तो बस चलते जाना है...पदयात्राओं ने कद बढ़ाया

(अभिनय आकाश)

आज़ादी की लड़ाई से आजादी के बाद तक विभिन्न दलों की लोगों तक पहुंच बनाने की कोशिश कहीं न कहीं रंग लाती दिखी है। अब राहुल गांधी एक बार फिर से यात्रा पर निकले हैं। मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंज़िल मगर, लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया मजरूह सुल्तानपुरी की ये लाइनें वर्तमान राजनीति पर बिल्कुल फिट बैठती हैं। देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखी गई किताब डिस्कवरी ऑफ इंडिया में उन्होंने एक किस्से का जिक्र किया है जब महात्मा गांधी दिसंबर 1914 के अंत में अवतरित होती है और उसके बाद से देश की राजनीति में एक बड़ा बदलाव आता है। इलीट लोगों के क्लब लगने वाली कांग्रेस पार्टी एक मॉस आर्गनाइजेशन में बदल जाती है। जवाहरल लाल नेहरू ने गांधी जी का जिक्र करते हुए इसमें बताया है कि गांधी जी ने सबसे बड़ा बदलाव जो भारतीय राजनीति में किया वो ये था कि उन्होंने लोगों के मन में जो खौफ था। अंग्रेजी साम्राज्य को लेकर जो डर था। गांधी ने मनोवैज्ञानिक स्तर पर और लोगों के मानस में एक बड़ा बदलाव किया। अंग्रेजों के डर को खत्म कर दिया। उन्होंने लोगों को अभय की बात सिखाई। अभय मतलब जिसको भय नहीं है। जुलाई 2024 को राहुल गांधी ने देश की संसद में खड़े होकर राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान अभय मुद्रा का बार बार जिक्र किया। शिव की तस्वीर में और कांग्रेस का चुनाव चिह्न अभय मुद्रा है और ये निडर रहने की बात करता है। इसी दौरान राहुल ने कहा कि इस्लाम में दोनों हाथों से दुआ करना भी एक तरह की अभय मुद्रा है। वैसे तो देश में गौतमबुद्ध, शंकराचार्य, गुरुनानक से लेकर महात्मा गांधी और विनोबा भावे तक की पदयात्रा का अपना स्वर्णिम इतिहास रहा है। महात्मा गांधी जब चला करते थे तो लोग जुड़ते चले जाते थे। वो कारवां इतना बड़ा हुआ करता था कि परिवर्तन की दिशा इस देश को आजादी में ले गई। इससे इतर राजनीतिक दलों के नेताओं की तरफ से भी पदयात्रा निकाली गई। यात्राएं इस देश की भीतर बहुत हुई हैं और हर यात्रा का कोई न कोई प्रतिफल उस राजनीतिक दल या नेता के भीतर जरूर आया है। देश में अब तक कई सियासी यात्राएं हुई है, उनमें से कुछ ने राष्ट्रीय या राज्य सियासत पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। लोगों ने उनसे संवाद बनाया। उनके अपने सरोकार लोगों से जुड़े और एक संवाद की स्थिति ने सत्ता तक भी पहुंचाया है।

अब राहुल गांधी एक बार फिर से यात्रा पर निकलेः आज़ादी की लड़ाई से आजादी के बाद तक विभिन्न दलों की लोगों तक पहुंच बनाने की कोशिश कहीं न कहीं रंग लाती दिखी है। अब राहुल गांधी एक बार फिर से यात्रा पर निकले हैं। अब राहुल गांधी वोट चोरी के सवाल को खड़ा करके बिहार के सासाराम से निकले हैं। 17 अगस्त शुरू हुई यह यात्रा 16 दिनों में बिहार के 20 से ज़्यादा ज़िलों से होकर गुज़रेगी। राहुल इस दौरान 1300 किमी की दूरी तय करेंगे। राहुल की वोट अधिकार यात्रा उनकी अब तक की पांचवी बड़ी यात्रा होगी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत जोड़ो यात्रा निकाली। बर्फ और ठंड में टी शर्ट में उनका खड़े होना एक पहचान बन गई थी। उसके बाद उन्होंने मणिपुर से लेकर मुंबई तक और उसका नतीजा लोकसभा के चुनाव में दिखा। कांग्रेस की सीटें बढ़ीं। बीजेपी की सीटें कम हुईं। लेकिन अब राहुल गांधी के लिए शायद सबसे बड़ी अग्निपरीक्षा शुरू हो रही है। पहले की राहुल गांधी की यात्रा को लेकर लोगों के मन में बहुत

ज्यादा अपेक्षा नहीं थी। न कोई बहुत ज्यादा उम्मीद लगाए बैठा था। लोगों को लग रहा था कि राहुल कुछ नहीं कर रहे हैं तो यात्रा पर निकले हैं। लेकिन दोनों यात्राओं से राहुल गांधी की छवि बदली। कांग्रेस और उससे भी कहीं ज्यादा उनके सहयोगियों को फायदा हुआ। लोकसभा चुनाव में नतीजा भी नजर आया।

उत्तर भारत में राहुल गांधी नरेंद्र मोदी का 'उत्तर' ढूढ़ने निकलेः पिछले दिनों नेता विपक्ष बनने के बाद राहुल गांधी से अपेक्षाएं बढ़ गई हैं। राहुल गांधी खास हमलावर तेवर दिखा रहे हैं। सरकार को लगातार कटघरे में खड़ा करने की कोशिश कर रहे है। वोट चोरी को सही मायनों में उन्होंने एक अखिल भारतीय मुद्दे में तब्दील कर दिया है। ऐसे में ये यात्रा क्या रंग लाती है। कांग्रेस और बिहार के गठबंधन को विधानसभा चुनाव में कैसे फायदा पहुंचाती है। 80 सीटों वाले यूपी, 48 सीटों वाले महाराष्ट्र और 42 सीटों वाले बंगाल में बीजेपी गिरी। लेकिन 40 सीटों वाले बिहार ने मोदी को बचा लिया। अगला युद्ध उसी बैटल ग्राउंड में है। जहां 90 के दशक के बाद कांग्रेस कभी उठ नहीं सकी है। राहुल जहां मोदी के साथ रेस लगाने के लिए उतरे हैं वहां की पॉलिटिकल पिक्चर पर थोड़ा नजर डालें तो । राहुल गांधी की बिहार यात्रा का मकसद बहुजन समाज को आकर्षित करना और नीतीश कुमार की जदयू व चिराग पासवान की लोजपा के वोट बैंक में सेंध लगाना है। राहुल ने जाति जनगणना, आरक्षण की सीमा हटाने, अत्याचारों को उजागर करने और धर्मनिरपेक्षता को मिलाकर एक नई पहचान गढ़ी है। वो मुकेश सहनी की वीआईपी पार्टी और दीपंकर भट्टाचार्य की सीपीआईएमएल की लाइन पर हैं।

संभावना दिखते ही सड़क पर उतर जाते हैं राहुलः राजनीति में अपने शुरुआती दिनों में भी राहुल ने पश्चिम यूपी के भट्टा-पारसौल में भूमि अधिग्रहण के खिलाफ पदयात्रा की थी। उनकी यात्रा को तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती के लिए एक और चुनौती के रूप में देखा गया था। राज्य सरकार ने युवा सांसद को 9 जुलाई को पड़ोसी अलीगढ़ जिले में किसानों की महापंचायत की अनुमति देने से इनकार कर दिया था, जो जबरन भूमि अधिग्रहण को लेकर इसी तरह के आक्रोश का सामना कर रहे थे। मंदिर में राहुल ने ग्रामीणों से कहा था कि मैंने आज तक एक भी किसान नहीं देखा जो विकास के खिलाफ हो। मगर विकास के नाम पर आपकी जमीन चोरी हो रही है।

देवरिया से दिल्ली तक किसान यात्राः किसानों के मुद्दों को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने देवरिया से दिल्ली तक किसान यात्रा की। 30 दिनों के दौरान वह लगभग एक महीने में 2,500 किलोमीटर की दूरी तय किया था। राहुल देवरिया के पंचलारी गांव से अपनी यात्रा की शुरुआत की थी। यात्रा के दौरान पार्टी वर्कर्स घर-घर जाकर घरों के मुखिया से किसानों की समस्याओं के बारे में चर्चा की थी। यात्रा के लिए 250 मिनी रथ तैयार किए गए। तब यूपी में कांग्रेस ने नारा दिया था कर्जा माफ, बिजली बिल हाफ...समर्थन मूल्य का करो हिसाब।

जहाँ मिली राहुल को आग जैसी ताक़तः 2015 में उन्होंने केदारनाथ की यात्रा की। इसका मकसद यह बताना था कि 2013 में आई आपदा के बाद स्थितियां सामान्य हो चुकी हैं। पैदल चलकर केदार नाथ मंदिर पहुँचे राहुल गाँधी ने कहा था कि यहाँ आकर मुझे आग जैसी शक्ति मिली है। राहुल ने कहा कि मैं मंदिर में गया, मैंने कुछ मांगा नहीं, लेकिन जब मैं मंदिर के भीतर गया तो मुझे आग जैसी शक्ति मिली। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि जब ये आपदा आई तो जो यहाँ अफ़सर काम करते हैं, जिन्होंने अपना खून पसीना दिया, उनके बारे में काफ़ी नकारात्मक बातें कही गईं लेकिन आपदा आने के बाद से अफ़सरों ने, सेना ने, पुलिसवालों ने बहुत अच्छा काम किया।

पिछली यात्रा से कितनी अलग : भारत जोड़ो यात्रा से बहुत अलग है वोटर अधिकार यात्रा महागठबंधन की वोटर अधिकार यात्रा राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से काफी अलग है। भारत जोड़ो यात्रा में पूरा फोकस राहुल गांधी पर था। वहीं वोटर अधिकार यात्रा में महागठबंधन के नेता खासकर तेजस्वी यादव बराबरी से शामिल हैं। भारत जोड़ो यात्रा में राहुल पूरी यात्रा के दौरान पैदल चले थे। वोटर अधिकार यात्रा में राहुल जीप में रहे और आम लोगों से सीधे मिलने नहीं गए। राहुल की ये यात्रा उस समय हो रही है जब सुप्रीम कोर्ट ने विपक्ष की मांगों को स्वीकार करते हुए चुनाव आयोग को निर्देश दिया है कि नए ड्राफ्ट रोल में जिनके नाम हटाए गए हैं, उनकी जानकारी सार्वजनिक की जाए। बिहार में इसी साल के आखिर तक विधानसभा चुनाव होने हैं और उसके कुछ महीनों पहले जब अचानक से एसआईआर की प्रक्रिया शुरू हुई, तो तमाम संदेह उठने लगे।

नए क्लेश्चन पेपर के साथ सामने आए राहुलः राहुल गांधी 7 अगस्त को सामने आए और उनके हाथों में आयोग का दिया वोटर लिस्ट लिए मीडिया को 2024 पोल डेटा का एक ऑनलाइन प्रजेंटेशन करके दिखाया। राहुल गांधी ने दावा किया कि कैसे महाराष्ट्र में पांच महीने के अंदर 1 करोड़ नए वोटर्स को जोड़ा गया। चुनाव आयोग ने पोल डेटा का सॉफ्ट कॉपी देने से मना कर दिया। कांग्रेस को पेपर सीट निकालने पड़े। जो पेपर निकला भी वो ओसीआर यानी ऑप्टिकल कैरेक्टर मशीन से निकाल सकते हैं। राहुल गांधी ने ये भी बताया कि चुनाव आयोग चाहता है कि सीसीटीवी फुटेज को खत्म कर दिया जाए। जिससे एक्ट्रा वोटर गायब हो जाए और उस पर सवाल न उठे।

सनातन की पुनर्स्थापना हेतु मिटाने होंगे दोहरे मापदण्ड

(डा. रवीन्द्र अरजरिया)

सनातन की दुहाई, वैदिक विधान की परम्परा और हिन्दुत्व का मुद्दा उठाने वालों को सबसे पहले आराधना स्थलों को सुव्यवस्थित करने की दिशा में कदम उठाना चाहिये जहां आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक आधारों पर खुलेआम खाई पैदा की जा रही है। शक्ति पीठों, पौराणिक स्थलों और आस्था के केन्द्रों में आमजन के लिए प्रतिबंधों की लम्बी सूची है किन्तु उन्हीं प्रतिबंधों को प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा उत्तरदायी लोगों के सामने ही खुलेआम धूल-धूसित किया जा रहा है। लगभग सभी पावन स्थलों पर आम और खास के लिए अलग-अलग व्यवस्थायें की गई हैं जिनमें दर्शन करने, प्रसाद पाने, भेंट प्राप्त करने, अंगवस्त्र मिलने, फोटो खींचने, पूजा करने, प्रतिमा के नजदीक जाने, स्वागत - सत्कार पाने जैसे अनगिनत कृत्य सम्मलित हैं। आराध्य की एक झलक पाने की लालसा से पंक्ति में खडे श्रद्धालुओं पर प्रभावशाली व्यक्ति का रौब हावी हो रहा है। तीर्थों, धामों, पीठों सहित अन्य पावन स्थलों पर असमानता, अन्याय और दुर्व्यवहार की स्थितियां चरमसीमा पर हैं। भक्ति भाव पर अहंकार का निरंतर प्रहार हो रहा है। कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका से जुडे लोगों के साथ-साथ बाहुबलियों, धनबलियों, भीडबलियों, पहुंचबलियों, जुगाडबलियों आदि के स्वागत में धार्मिक स्थानों का प्रबंध तंत्र न केवल पलक पांवडे बिछाता है बल्कि उनकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति के लिए भी तत्पर रहता है। फोटो प्रतिबंधित, प्रवेश प्रतिबंधित, पूजन प्रतिबंधित, शोर प्रतिबंधित स्थानों पर बलशालियों को मनमानी करने की छूट दी जा रही है। इन्हें गर्भगृह तक के दृश्यों को कैमरों में कैद कराने, पुजारी द्वारा विशेष प्रसाद दिलवाने, प्रतिमा की स्पर्श वस्तु प्रदान करवाने जैसे कृत्यों के लिए वहां का तंत्र स्वयं उपस्थित रहता है। ऐसे में आम भक्तों की भावनायें निरंतर आहत होकर आंसू के रूप में प्रकट हो रहीं हैं। जागरूक नागरिकों द्वारा समान व्यवहार की मांग पर उन्हें प्रबंधन के साथ-साथ प्रशासन तक से दुर्व्यवहार का शिकार होना पडता है। भावुकता के वशीभूत होकर पंक्तिबद्ध पहुंचने वाले भोले-भाले श्रद्धालुओं को आराध्य के सम्मुख पहुंचते ही धक्के देकर आगे बढा दिया जाता है। वे भर नजर अपने परमात्मा के दर्शन भी नहीं कर पाते हैं। उनका कंठ अवरुद्ध हो जाता है, नेत्र नम हो जाते हैं और हो जाता है मन भारी। अनेक स्थानों पर धर्म के ठेकेदार के रूप में पैत्रिक कब्जा जमाने वालों का अपना अलग ही आतंक है। ज्यादातर श्रद्धा के केन्द्रों पर पहुंचते ही वहां पहले से मौजूद दलालों का आक्रमण होने लगता है। सामान बेचने वालों से लेकर दर्शन कराने का दावा करने वालों तक का प्रहार शुरू हो जाता है। आगन्तुक को घेराव जैसी स्थिति का सामना करना पडता है। अधिकांश धार्मिक स्थानों पर लम्बे समय से सक्रिय इन गिरोहों का अघोषित कब्जा हो चुका है। अनेक गिरोहों ने संगठन, समितियां और मंच जैसी संस्थायें पंजीकृत कराके वैधता प्राप्त कर ली है परन्तु ज्यादातर लोग स्वतंत्र रूप से अपनी गुण्डागिरी की दम पर ही सक्रिय देखे जा सकते हैं। ज्यादातर आस्था स्थलों पर तो वहां के तंत्र ने ही तीसरी व्यवस्था को मूर्त रूप दे दिया है जिसमें आस्था को धन की तराजू पर तौला जाता है। विशिष्ट दर्शन, विशिष्ट प्रसाद, विशिष्ट पूजा, विशिष्ट सम्मान के लिए अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग धनराशियां तक निर्धारित कर दीं गई है ताकि अहंकार में डूबे धनपशुओं को आराध्य के दरबार में भी विशिष्टता प्राप्त हो सके। इस संबंध में तर्क प्रस्तुत करते हुए वहां का तंत्र स्थान की व्यवस्था हेतु धनसंग्रह का आधार प्रस्तुत करता है परन्तु अधिकांश स्थानों पर स्वेच्छा से भारी धनराशि दान में निरंतर प्राप्त हो रही है, उन स्थानों के तंत्र का धनसंग्रह वाला तर्क गले नहीं उतरता। आस्थालयों में चल रही इस विभाजनकारी व्यवस्था ने हिन्दुत्व की एकता वाले नारे की धज्जियां उडाकर रख दी हैं। राजनैतिक दलों द्वारा जातिवाद के हथियार से वैमनुष्यता की खाई खोदना शुरू कर दी है। आरक्षण की माला से अयोग्यता का राज्याभिषेक हो रहा है। पैसों की धूल से कानून दफन किया जा रहा है। निरीहों पर जुल्म करके सबलता द्वारा विलासता के हिंडोले पर पैंगे बढाई जा रही है। धर्म निरपेक्षता की आड में जनसंख्यात्मक असंतुलन पैदा किया जा रहा है। अभिव्यक्ति की स्वाधीनता के नाम पर उत्तेजक संवादों की बाढ सी आ गई है। इन सभी कारकों का शिकार केवल और केवल सनातन धर्मावलम्बियों को ही बनाया जा रहा है। उनके पवित्र स्थानों, पवित्र ग्रन्थों, पवित्र आचरणों, पवित्र पर्वों, पवित्र त्यौहारों, पवित्र मान्यताओं पर निरंतर हो रहे कुठाराघात में वर्णशंकरों की एक बडी जमात शामिल है, जो समानता का राग अलाप कर परम्परागत मान्यताओं को समाप्त करने में लगी है। कभी न्यायालयों के दरवाजों पर दस्तक दी जाती है तो कभी आक्रान्ताओं के इतिहास की दुहाई दी जाती है। कभी बहुंसख्यकों का जुल्म बताया जाता है तो कभी अल्पसंख्यकों की निरीहता निरूपित की जाती है। हमारे घर के अन्दर बैठे जयचन्द ही जब परिवारजनों को खण्ड-खण्ड करने का बीडा लिये बैठे हैं तब उन्हें विरोधियों का साथ तो बिना मांगे प्राप्त होना, स्वाभाविक ही है। धार्मिक स्थानों की पारदर्शी व्यवस्था के लिए जन्म के आधार सनातन का कबादा ओढने वाले ही सबसे बडे अवरोध बनकर खडे हो जाते हैं जिन्हें स्वयंभू बुद्धिजीवियों की एक जमात का साथ, कुछ राजनैतिक दलों का समर्थन और विदेश में बैठे षडयंत्रकारियों से पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। ऐसे में पैसों की दम पर पीआर का सहारा लेकर अनेक धर्माचार्यों की लोकप्रियता का ग्राफ रातों रात आसमान पर पहुंचा दिया जाता है।

दिखावा नहीं सादगी पसंद है प्रथम पूज्य श्री गणेश को

बुद्धि , ज्ञान और समृद्धि के प्रतीक भगवान श्री गणेश सभी देवों में प्रथम पूज्य हैं । गणेश जी दिखावे और अहंकार के वश में रहने वालों को ज्ञान का पाठ भी पढ़ाया करते हैं । हिंदू धर्म - ग्रंथों में प्रथम पूज्य गणेश जी से संबंधित अनेक पौराणिक कथाएं हमें इस बात का ज्ञान कराती हैं कि गणेश जी अपने उन भक्तों पर कृपा बरसाते हैं जो भले ही गरीब हों किंतु विनम्रता और सदव्यवहार उनकी आत्म में बसे हों । हाथी के सिर और मनुष्य शरीर वाला उनका अद्भुत स्वरूप देवताओं के समूह में उनकी विशिष्टता का प्रमाण कहा जा सकता है । भगवान श्री गणेश अपने भक्तों की परीक्षा भी लेते हैं और उनके भीतर समाए गर्व को तोड़ने का का भी कार्य करते हैं । सहज एवं सरल गणेश भक्तों को भगवान श्री गणेश का आशीर्वाद स्वतः ही प्राप्त होता रहता है । इसके विपरीत धन संपन्नता और वैभव के वशीभूत भगवान गणेश को प्रसन्न करने की कोशिश हमेशा असफल ही होती है । भगवान गणेश के इसी विशेष गुण की अनेक कथाएं धर्म - शास्त्रों में उल्लेखित हैं । ऐसी ही एक कथा धन और समृद्धि के देवता भगवान कुबेर से संबंधित है । भगवान गणेश ने अपने स्वभाव से कुबेर के घमंड को चूर कर यह संदेश दिया कि उन्हें धन नहीं शुद्ध मन से जीता जा सकता है । भगवान श्री गणेश को प्रसन्न करने के लिए इस मंत्र का जप करना उत्तम बताया गया है –

÷ मायातीताय भक्तानाम कामपुराय ते नमः ।
सोमसूर्याग्निनेत्राय नमो विश्वंभराए ते।।÷

भगवान गणेश और धन के देवता कुबेर का एक बड़ा ही ज्ञानवर्धक प्रसंग शास्त्रों में बताया गया है । इस प्रसंग को सुनने और पढ़ने के बाद मनुष्य के मन में राज करने वाला अहंकार बड़ी ही आसानी से मन को शुद्ध कर जाता है ।

धन के देवता भगवान कुबेर का हृदय भी अपार धन संपन्नता से मलिन हो चुका था । इसी बीच भगवान कुबेर से भगवान श्री गणेश की शिक्षाप्रद मुलाकात हुई । इस मेल - मिलाप के बाद कुबेर के अंदर समाया गर्व समाप्त हो गया । कुबेर का भव्य स्वर्ण महल और प्रचुर हीरे - मोती - जवाहरात वाला खजाना पौराणिक कथाओं में वर्णित है । यही भगवान कुबेर को समृद्धि का प्रतीक बनाते हैं । कथा के अनुसार अपनी इसी वैभवशीलता का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से एक बार धन कुबेर ने अपने महल में भव्य भोज का आयोजन किया । अपने वैभव का प्रदर्शन करने उन्होंने भगवान शिव और देवी पार्वती सहित अनेक देवताओं को निमंत्रित करने का मन बनाया । अपनी अपार धन संपन्नता के अभिमान से अभिभूत कुबेर स्वयं भगवान शिव और देवी पार्वती के निवास कैलाश पर्वत पहुंच गया । जब कुबेर वहां पहुंचे तो भगवान शिव अपनी ध्यान मुद्रा में लीन थे । भगवान शिव ने कुबेर के निमंत्रण को स्वीकार नहीं किया । भगवान शिव ने कुबेर को सुझाव देते हुए कहा कि उनकी तरफ से उनके युवा पुत्र गणेश भोज में शामिल हो सकते हैं ।

अपने पिता की इच्छा का सम्मान करते हुए भगवान श्री गणेश कुबेर के महल पहुंचे । ज्ञान और भोलेपन के साथ सादगी को पसंद करने वाले गणेश ने प्रवेश करते ही अनुभव किया कि कुबेर भव्य संपत्ति के वशीभूत अपने मेहमानों को प्रभावित करना चाहते हैं ! कुबेर ने अपने महल की भव्यता , साज - सज्जा , विलासिता के साथ स्वर्ण पात्रों के माध्यम से अपनी अकूत संपत्ति का प्रदर्शन कर रखा था ! कुबेर ने बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ गणेश जी के समक्ष 108 प्रकार के विविध भोज्य पदार्थ परोसे । भगवान गणेश की दिव्य दृष्टि में यह भोज नहीं बल्कि एक बड़ा तमाशा था । यह इंद्रियों को मंत्रमुग्ध कर देने और अभिभूत कर देने वाला था ! भोज शुरू हुआ और गणेश जी का पूरा ध्यान भोजन पर केंद्रित हो गया । गणेश जी की भूख केंद्र में आ बैठी जो तृप्त होने का नाम ही नहीं ले रही थी ! कुबेर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । वे सोचते रहे कि आखिर इतनी भोज्य सामग्री ग्रहण करने के बाद भी गणेश की भूख शांत क्यों नहीं हो रही है ? महल में उपलब्ध सारी भोजन सामग्री के अलावा गणेश जी ने कच्ची - पक्की सभी सामग्री को ग्रहण कर समाप्त कर दिया ! उनकी नजरें निरंतर भोजन की नई थाली की ओर ताकती रही ! भगवान गणेश की अतृप्त भूख से व्याकुल कुबेर चुपचाप महल से निकलकर कैलाश पर्वत पहुंचा ! भगवान शिव ने अपनी अंतर्दृष्टि से सब कुछ जान लिया था ।

धन के देवता कुबेर ने अपने महल में भोजन के दौरान घटी घटना का वर्णन भोलेनाथ से किया । कुबेर निराशा से भरे हुए थे । उन्हें अपने अभिमान का एहसास हो चुका था और वे उसका समाधान ढूंढ रहे थे । सर्वज्ञ और दयालु भगवान भोलेनाथ ने कुबेर की निराशा का कारण जान लिया । भगवान गणेश की अतृप्त भूख का मूल कारण समृद्धि और फिजूल खर्ची का अहंकारी प्रदर्शन ही था , जिसने आतिथ्य और विनम्रता के सार को ढंक लिया था । उन्होंने कुबेर को समझाया कि जिस अति अभिमान के साथ उन्होंने भोज का आयोजन किया था , वही समस्या का मूल कारण है । उन्होंने कुबेर को सुझाव दिया कि गणेश के पास फिजूल खर्ची और अभिमान के बजाय विनम्रता और स्नेह के साथ जाएं तो उन्हें समस्या का समाधान मिल जाएगा । समस्या को सुलझाने के लिए भगवान शंकर ने कुबेर को माता पार्वती द्वारा प्रेम पूर्वक तैयार किए गए मुरमुरे से भरा एक कटोरा भेंट किया । भगवान शिव से प्राप्त उक्त भेंट को लेकर कुबेर अपने महल लौटे और भगवान गणेश के सम्मुख बड़ी विनम्रता से परोसा । साथ ही उन्होंने अपने द्वारा पहले किए गए दिखावे के लिए क्षमा प्रार्थना भी की । ज्ञान और करुणा के अवतार गणेश जी ने कुबेर के हृदय परिवर्तन को पहचान लिया । कटोरे में उपलब्ध मुरमुरे को खाते ही भगवान गणेश की अतृप्त भूख तृप्त हो गई । अब कुबेर ने यह समझ लिया था कि अभिमान और दिखावे के स्थान पर शालीनता और विनम्रता ही सबसे बड़ी संपत्ति है । आज हमारे देश में ऐसे ही अभिमानी कुबेर रूपी नेताओं की कमी नहीं है ! छोटे से छोटे आयोजन में धन संपन्नता से परिपूर्ण उद्योगपति , व्यापारी , मंत्री , बड़े पदों पर आसीन लोगों के भीतर कुबेर की आत्मा ने घर कर लिया है यदि भगवान शिव के सुझाव को स्वीकार कर मानवीय समाज का यह वर्ग शालीनता को अपना ले तो इस देश से गरीबी और भुखमरी उसी तरह खत्म हो सकती है जैसे कुबेर का अभिमान खत्म हुआ ।

डॉ. सूर्यकांत मिश्रा
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
9425559291.

संक्षिप्त समाचार

मॉस्को शॉपिंग सेंटर में हुए धमाके में एक की मौत, तीन घायल

वाशिंगटन, एजेंसी। रूस की महानगरीय राजधानी मॉस्को की एक मशहूर वाणिज्यिक इमारत में रविवार को हुए धमाके में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन लोग घायल हो गए। रूसी आपातकालीन सेवाओं के मुताबिक,यह धमाका मध्य मॉस्को स्थित लुब्यंका स्क्वायर के सेंट्रल चिल्ड्रन स्टोर शॉपिंग मॉल की तीसरी मंजिल पर हुआ। सरकारी समाचार एजेंसी आरआईए नोवोस्ती ने बताया कि धमाका एक गैस सिलिंडर में विस्फोट से हुआ था। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, दो घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

उत्तर कोरिया ने दो नई मिसाइलों का किया परीक्षण

प्योंगयांग, एजेंसी। दक्षिण कोरिया व अमेरिका के वार्षिक सैन्य अभ्यास के बीच उत्तर कोरिया ने हवाई हमलों को रोकने में सक्षम दो नई मिसाइलों का परीक्षण किया। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन इस परीक्षण के दौरान मौजूद रहे। उत्तर कोरिया की सरकारी समाचार एजेंसी ने बताया कि शनिवार को हुए परीक्षण ने दर्शाया कि ये मिसाइलें ड्रोन व क्रूज मिसाइल के हमलों से निपटने में सक्षम हैं। यह परीक्षण ऐसे समय में हुआ है, जब दक्षिण कोरिया के नए राष्ट्रपति ली जे म्यूंग शिखर सम्मेलन के लिए टोक्यो की यात्रा पर हैं।

मंडेला के देश में मना भारत दिवस वैश्विक आतंकवाद से निपटने पर जोर

केप टाउन, एजेंसी। रंगभेद विरोधी आंदोलन के नेता व दक्षिण अफ्रीकी लोकतांत्रिक सरकार के पहले राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला की धरती से आतंकवाद के खिलाफ आवाज बुलंद हुई है। जोहानिसबर्ग के इंडिया क्लब में आयोजित 16वें वार्षिक भारत दिवस समारोह में वैश्विक आतंकवाद से निपटने की भारत की प्रतिबद्धता पर जोर रहा। इंडिया क्लब प्रवासी भारतीयों का एक संगठन है। इसकी स्थापना 16 वर्ष पहले की गई थी। भारत दिवस समारोह का आयोजन शनिवार को हुआ। इसमें हजारों लोग शामिल हुए। यह आयोजन अगस्त में भारत के स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में किया जाता है। इसमें भारतीय प्रवासियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। द. अफ्रीका में मौजूद भारतीय कंपनियों ने विभिन्न स्टॉल पर अपने उत्पाद भी प्रदर्शित किए। द.अफ्रीका के वाणिज्यिक केंद्र सैंडटन के मध्य में स्थित मैदान के प्रवेश द्वार पर वैश्विक आतंकवाद पर एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें दिखाया गया कि किस प्रकार न केवल भारत, बल्कि पूरा विश्व दशकों से आतंकी हमलों की चपेट में है। प्रदर्शनी में भारत सहित दुनिया भर के विभिन्न स्थानों पर हुए हमलों की टाइमलाइन शामिल थी।

ब्रिटेन में अपराधियों को यात्रा व पब में जाने की नहीं होगी इजाजत

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन सरकार की ओर से रविवार को घोषित नए दंड नियमों के तहत अपराधियों के पब जाने, संगीत समारोहों में शामिल होने व खेल स्पर्धाओं को देखने पर प्रतिबंध रहेगा। नए उपायों के तहत देश के न्यायाधीश अपराधियों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा सकेंगे तथा उन पर ड्राइविंग प्रतिबंध, यात्रा प्रतिबंध व निशिद्ध क्षेत्रों तक सीमित रहने जैसे प्रतिबंध भी लागू कर पाएंगे। ब्रिटेन के कानून मंत्रालय ने कहा कि इन बदलावों से सामुदायिक दंड को कठोर बनाया जाएगा, जिससे दोबारा अपराध करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने में मदद मिलेगी।

वेनेजुएला में 13 राजनीतिक बंदियों की रिहाई, विपक्ष ने बताया एक सकारात्मक कदम

कैरेकस, एजेंसी। वेनेजुएला में विपक्षी नेताओं और सामाजिक संगठनों ने रविवार को बताया कि राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की सरकार द्वारा पिछले साल के विवादित चुनावों के बाद किए गए दमन के तहत गिरफ्तार किए गए 13 लोगों को रिहा किया गया है। हालांकि सरकार की ओर से इन रिहाइयों की तुरंत पुष्टि नहीं की गई, लेकिन विपक्षी नेता हेनरिक कैप्रिलेस ने सोशल मीडिया पर इस कदम का स्वागत किया और इसे जेल में बंद लोगों के लिए एक आगे बढ़ने वाला कदम बताया। उन्होंने बताया कि 8 लोगों को पूरी तरह रिहा किया गया, जबकि 5 को घर में नजरबंद किया गया है। कैप्रिलेस ने एक वीडियो साझा करते हुए लिखा, आज कई परिवार अपने अपनों से फिर मिल पाए हैं।

स्पेसएक्स के स्टारशिप की लॉन्चिंग टली

वाशिंगटन, एजेंसी। एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के विशाल स्टारशिप रॉकेट की लॉन्चिंग टल गई है। लॉन्चिंग से करीब आधा घंटे पहले ही रॉकेट की लॉन्चिंग टाल दी गई। हालांकि आधिकारिक बयान जारी कर कंपनी ने लॉन्चिंग टालने की वजह का खुलासा नहीं किया है, लेकिन दावा किया जा रहा है कि ग्राउंड सिस्टम में अज्ञात तकनीकी दिक्कत के चलते लॉन्चिंग टाली गई है। स्पेसएक्स के इस रॉकेट की लॉन्चिंग इसलिए भी अहम है क्योंकि हाल के समय में कंपनी के रॉकेट में धमाकों की घटनाएं हुई हैं।

बीजिंग में चीनी छात्रा ने दी पहली भरतनाट्यम एकल प्रस्तुति

बीजिंग , एजेंसी। चीन की 17 वर्षीय एक लड़की ने प्राचीन भारतीय नृत्य शैली भरतनाट्यम में एकल प्रस्तुति अरंगेत्रम देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह दूसरी चीनी छात्रा बन गई है। यह चीन में युवाओं के बीच भरतनाट्यम की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। दक्षिण भारत के प्राचीन नृत्य भरतनाट्यम के कलाकारों की दर्शकों, शिक्षकों और विशेषज्ञों के सामने मंच पर उनकी पहली प्रस्तुति को 'अरंगेत्रम कहा जाता है। झांग जियायुआन ने शुक्रवार रात बीजिंग के एक खचाखच भरे सभागार में अपना अरंगेत्रम प्रस्तुत किया। झांग की प्रस्तुति के दौरान भारत के उप-राजदूत अभिषेक शुक्ला के अलावा प्रसिद्ध चीनी भरतनाट्यम कलाकार जिन शान शान भी दर्शकों में शामिल रहीं। झांग को रिया के नाम से भी जाना जाता है। वह अरंगेत्रम प्रस्तुत करने वाली चीन में प्रशिक्षित दूसरी चीनी शिष्या हैं। पिछले साल लगभग इसी समय 13 वर्षीय लेई मुजी चीन में प्रशिक्षित पहली चीनी भरतनाट्यम नृत्यांगना बनी थीं। उन्होंने भारत की प्रसिद्ध भरतनाट्यम कलाकार लीला सैमसन के सामने अरंगेत्रम की सफल प्रस्तुति दी थी। जिन शान शान ने लीला सैमसन के मार्गदर्शन में यह नृत्य विधा सीखी थी। जिन ने चेन्नई के प्रसिद्ध कलाक्षेत्र फाउंडेशन में भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। चीन में भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के प्रति जुनून प्रख्यात चीनी नृत्यांगना झांग जुन (1933-2012) ने जगाया था।

वॉशिंगटन डीसी के बाद शिकागो हथियारों से लैस नेशनल गार्ड

वाशिंगटन, एजेंसी।
अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में नेशनल गार्ड की तैनाती के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब इलिनोइस के शिकागो में सैन्य तैनाती की योजना बना रहे हैं। वॉशिंगटन पोस्ट के अनुसार, पेंटागन पिछले कुछ हफ्तों से शिकागो में सैन्य तैनाती की रणनीति पर काम कर रहा है। सितंबर तक शिकागो में एक हजार से अधिक नेशनल गार्ड जवान तैनात हो सकते हैं। ट्रंप ने 12 अगस्त को वॉशिंगटन में 800 नेशनल गार्ड की तैनाती का आदेश दिया था, ताकि राजधानी में बिगड़ी कानून-व्यवस्था को सुधारा जा सके। यह फैसला अपराध, अवैध आप्रवासन और बेघरों पर कार्रवाई से जुड़ा है।

वॉशिंगटन डीसी में ट्रंप के आदेश पर गश्त कर रही कुछ नेशनल गार्ड इकाइयों ने हथियार ले जाना शुरू कर दिया है। रक्षा विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि कुछ मिशनों में इकाइयां हैंडगन और राइफल्स से लैस होंगी। प्रवक्ता ने कहा कि हथियारबंद इकाइयों को प्रशिक्षित किया गया है और वे

सख्त नियमों का पालन कर रही हैं। रविवार को एसोसिएटेड प्रेस के एक फोटोग्राफर ने यूनियन स्टेशन के बाहर साउथ कैरोलिना नेशनल गार्ड के जवानों को पिस्तौल के साथ देखा।

संयुक्त कार्य बल ने कहा कि रविवार से इकाइयों ने अपने सेवा हथियार ले जाने शुरू किए हैं। सैन्य नियमों के अनुसार, बल का उपयोग केवल अंतिम उपाय के रूप में और केवल मृत्यु या गंभीर शारीरिक क्षति के खतरे में किया जाएगा। यह बल वॉशिंगटन के निवासियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। रक्षा अधिकारी ने बताया कि केवल विशिष्ट अभियानों में तैनात सैनिक हथियार ले जाएंगे, जैसे कि कानून प्रवर्तन की मौजूदगी स्थापित करने के लिए गश्त करने वाले सैनिक। परिवहन या प्रशासनिक कार्यों में लगे सैनिक संभवतः निहत्थे रहेंगे।

रविवार को ट्रंप ने डेमोक्रेटिक नेतृत्व वाले शहरों में सैन्य तैनाती का विस्तार करने की धमकी दी, जिसमें शिकागो और न्यूयॉर्क शामिल हैं। वॉशिंगटन में हजारों नेशनल गार्ड और संघीय कानून प्रवर्तन अधिकारी सड़कों पर गश्त कर रहे हैं, जिसके चलते स्थानीय लोगों ने छिटपुट विरोध प्रदर्शन किए हैं। ट्रंप ने मैरीलैंड के गवर्नर वेस मूर के साथ विवाद में बाल्टीमोर को धमकी दी। मूर ने ट्रंप की अपराध और बेघरों से निपटने के लिए संघीय शक्ति के उपयोग की आलोचना की थी और उन्हें मैरीलैंड आकर जन सुरक्षा पर चर्चा करने का न्योता दिया था। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा कि वेस मूर का क्राइम रिकॉर्ड बहुत खराब है। अगर उन्हें मदद चाहिए, जैसे लॉस एंजिल्स में गैविन न्यूसम को मिली, तो मैं सैनिक भेजूंगा और अपराध को जल्दी साफ कर दूंगा।

मूर ने कहा कि उन्होंने ट्रंप को निमंत्रण इसलिए दिया क्योंकि वे बाल्टीमोर में अपराध दर में सुधार के बारे में अज्ञानता में रहना पसंद करते हैं। बाल्टीमोर में हिंसक अपराध दर में कमी आई है। 2023 में 200 हत्याएं दर्ज हुईं, जो पिछले साल से 24त्न और 2021 से 42त्न कम हैं। 2023-24 में हिंसक अपराध 8त्न और संपत्ति अपराध 20त्न कम हुए। मूर ने सीबीएस के फेस द नेशन पर कहा कि राष्ट्रपति मुझ पर बात करने में समय बिता रहे हैं, जबकि मैं उन लोगों की सेवा पर ध्यान दे रहा हूं जिनकी मैं सेवा करता हूं।

यहूदी विरोधी हिंसा रोकने के लिए जरूरी कदम नहीं उठाने का लगाया था आरोप

फ्रांस में अमेरिकी राजदूत तलब

पेरिस, एजेंसी।
फ्रांस ने अमेरिकी राजदूत चार्ल्स कुशनेर को तलब किया है। यह कदम तब उठाया गया जब कुशनेर ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि फ्रांस यहूदी-विरोधी (एंटीसेमिटिक) हिंसा को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहा है। रविवार को फ्रांसीसी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने यह जानकारी दी।

चार्ल्स कुशनर यहूदी हैं और उनके बेटे की शादी अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी से हुई है। उन्होंने यह खुला पत्र अमेरिकी अखबार वॉल स्ट्रीट जर्नल में प्रकाशित किया। यह पत्र ऐसे समय में सामने आया है, जब फ्रांस, अमेरिका और इस्राइल के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद गहराते जा रहे हैं।

पत्र में कुशनेर ने फ्रांसीसी राष्ट्रपति से अपील की कि वह नफरत फैलाने वाले अपराधों पर कानून को सख्ती से लागू करें और इस्राइल की आलोचना में तोड़ी नरमी दिखाएं। उन्होंने यह भी कहा कि फ्रांस की तरफ से फलस्तीन को मान्यता देने जैसी बातों ने देश

में यहूदी-विरोधी घटनाओं को बढ़ावा दिया है।

फ्रांस के विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा, फ्रांस ने अमेरिकी राजदूत चार्ल्स कुशनेर के उन आरोपों को देखा है, जो उन्होंने राष्ट्रपति को भेजे पत्र में यहूदी-विरोधी घटनाओं में बढ़ोतरी और फ्रांसीसी प्रशासन की ओर से कथित रूप से पर्याप्त कार्रवाई न करने को लेकर लगाए हैं। मंत्रालय ने आगे कहा, राजदूत के ये आरोप अस्वीकार्य हैं। कुशनेर को सोमवार को हाजिर होना होगा। कुशनेर का यह पत्र तब आया जब कुछ दिन पहले इस्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी मैक्रों को एक पत्र लिखा था। यरूशलम पोस्ट के मुताबिक, उस पत्र में नेतन्याहू ने मैक्रों पर फलस्तीन को मान्यता देने की बात कहकर यहूदी-विरोधी माहौल को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था। राष्ट्रपति मैक्रों गाजा में युद्ध और उसमें मारे जा रहे फलस्तीनी नागरिकों को लेकर इस्राइल की आलोचना करने वालों में सबसे आगे रहे हैं, जबकि डोनाल्ड ट्रंप लगातार इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू का समर्थन करते आए हैं। कुशनेर ने अपने पत्र में लिखा, इस्राइल पर सार्वजनिक रूप से की जा रही सख्त टिप्पणियां और फलस्तीन को मान्यता देने जैसे इशारे चरमपंथियों को हौसला देते हैं, हिंसा को बढ़ाते हैं और फ्रांस में यहूदियों के जीवन को खतरे में डालते हैं।

धार्मिक पवित्रता के बहाने जबरन वसूली का गंदा खेल

इस्लामाबाद , एजेंसी। पाकिस्तान में ऑनलाइन चैट के कारण ईशनिंदा के अपराध में लोग जेल भेजे जा रहे हैं। कई अभियुक्तों का कहना है कि उन्हें ऑनलाइन ऐसे लोगों ने फंसाया था जो उनसे जबरन वसूली करना चाहते थे या ईशनिंदा के आरोपों में गिरफ्तारियों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर बताना चाहते थे।

उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान में ईशनिंदा के लिए मौत की सजा हो सकती है, लेकिन अभी तक किसी को इसके लिए फांसी दी नहीं गई है। मानवाधिकार विशेषज्ञों का कहना है कि ईशनिंदा के बढ़ते मामलों को दर्शाना (चाहे वह कृत्रिम हों या नहीं) इस्लामी समूहों के लिए धार्मिक पवित्रता की रक्षा के बहाने जनता का समर्थन जुटाने और धन जुटाने का एक तरीका है।

अभियुक्तों के परिवारों, कानून विशेषज्ञों, मानवाधिकार के पैरोकारों एवं कुछ अधिकारियों के साथ साक्षात्कार के साथ ही सरकारी रिपोर्टों की समीक्षा से भी इससे जुड़े कानूनों के दुरुपयोग का संकेत मिलता है। सरकारी मानवाधिकार संस्था द्वारा पिछले वर्ष अक्टूबर में प्रकाशित एक रिपोर्ट में ऑनलाइन ईशनिंदा के लिए गिरफ्तारियों में तेज वृद्धि दर्ज की गई थी। इसके मुताबिक 2020 में 11, 2021 में नौ और 2022 में 64 गिरफ्तारियां हुई थीं। इसके बाद ईशनिंदा के लिए सजाओं में संशोधन किया गया। इसके बाद गिरफ्तारियों में भारी वृद्धि हुई। 2023 में यह संख्या 213 और 2024 के पहले सात महीनों में 767 तक पहुंच गई।

श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की जेल में बिगड़ी तबीयत

कोलंबो एजेंसी। श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की तबीयत अचानक बिगड़ने के बाद उन्हें शनिवार को कोलंबो नेशनल हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती कराया गया। शुक्रवार रात उन्हें सरकारी फंड के दुरुपयोग के आरोप में हिरासत में लिया गया था। कोर्ट ने विदेश यात्रा के लिए सरकारी फंड के गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया था, जिसके बाद उनकी हालत बिगड़ गई। कोलंबो नेशनल हॉस्पिटल के डिप्टी डायरेक्टर-जनरल रुक्शन बेल्लाना ने बताया कि विक्रमसिंघे को गंभीर डिहाइड्रेशन की शिकायत थी। उनकी हालत स्थिर है, लेकिन उन्हें गंभीर डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर के चलते निगरानी में रखा गया है। विक्रमसिंघे को शुक्रवार रात कोलंबो की न्यू मैगजीन जेल में रखा गया था, लेकिन जेल के मेडिकल सुविधाओं के नाकाफी होने के कारण उन्हें सरकारी अस्पताल में भेजा गया। एक जेल प्रवक्ता ने बताया कि उनकी हालत बिगड़ने पर तुरंत यह कदम उठाया गया। इससे पहले, विपक्षी नेताओं ने जेल में उनसे मुलाकात की थी।

क्या कीव ने रूसी परमाणु ऊर्जा संयंत्र को बनाया निशाना? यूक्रेन के स्वतंत्रता दिवस पर बढ़ा संघर्ष

मॉस्को, एजेंसी।
रूस ने रविवार को आरोप लगाया कि यूक्रेन ने उसके पश्चिम क्षेत्र कुर्स्क में स्थित एक परमाणु बिजलीघर पर ड्रोन से हमला किया, जिससे वहां आग लग गई। यह हमला उस समय हुआ, जब यूक्रेन अपनी स्वतंत्रता की 34वीं वर्षगांठ मना रहा था।

रूसी अधिकारियों के मुताबिक, इन हमलों में कई ऊर्जा और बिजली से जुड़ी सुविधाओं को निशाना बनाया गया। बिजलीघर में लगी आग को जल्द ही बुझा लिया गया। किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। संयंत्र की प्रेस सेवा ने टेलीग्राम पर बताया कि इस हमले में एक ट्रांसफॉर्मर को नुकसान पहुंचा, लेकिन रेडिएशन का स्तर सामान्य बना रहा। संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था (आईएईए) ने कहा कि उसे मीडिया के जरिए जानकारी मिली है कि सैन्य गतिविधि के चलते एक ट्रांसफॉर्मर में आग लगी, लेकिन अभी तक इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो पाई है। संस्था के निदेशक राफेल ग्रोसी ने कहा कि हर परमाणु सुविधा की हर समय सुरक्षा जरूरी है। यूक्रेन ने इस कथित हमले पर अभी तक कोई टिप्पणी नहीं की है। इसी बीच, रूस के लेनिनग्राद क्षेत्र के उस्त-लुगा बंदरगाह पर भी आग लगने की खबर है, जो एक बड़ा ईंधन निर्यात केंद्र है। क्षेत्र के गवर्नर ने बताया कि करीब 10 यूक्रेनी ड्रोन को मार गिराया गया, जिनके मलबे से आग लगी। रूसी रक्षा मंत्रालय ने दावा किया कि रविवार तड़के रूस के विभिन्न हिस्सों में उड़ रहे 95 यूक्रेनी ड्रोन को उसकी वायु रक्षा प्रणाली ने नष्ट कर दिया।

सारी जिंदगी की कमाई लगा महिला ने पति के साथ खरीदा 3.3 करोड़ में घर, रहने गई तो हो गई गंभीर बिमारी, सच जान उड़ गए होश

ओहायो , एजेंसी।
अमेरिका के ओहायो में रहने वाली 28 वर्षीय सारा ने अपने पति के साथ मिलकर साल 2024 में लगभग ?3.3 करोड़ की भारी रकम खर्च कर एक नया घर खरीदा। लेकिन सपनों का यह आशियाना जल्द ही एक बुरे ख्वाब में बदल गया। घर में शिफ्ट होते ही सारा की तबीयत लगातार बिगड़ने लगी। उन्हें लगातार सर्दी-खांसी, आंखों के पास लाल चकत्ते, खुजली और यहां तक कि त्वचा फटने जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ा। शुरुआत में उन्होंने सोचा कि शायद मौसम या एलर्जी की वजह से ऐसा हो रहा है, लेकिन हालात बद से बदतर होते गए।जब मेडिकल जांच और घर की गहराई से पड़ताल कराई गई, तो असली कारण सामने आया - घर के भीतर खतरनाक स्तर की फंगस (द्रश्यद्यस्र) मौजूद थी। यह

फंगस दीवारों और छिपी हुई जगहों में फैल चुकी थी और लगातार हवा में ज़हरीले कण छोड़ रही थी। जांच में ये भी सामने आया कि घर के पुराने मालिक को इस फंगस के बारे में पहले से जानकारी थी, लेकिन उन्होंने इसे छिपाकर घर बेच दिया। बीमा से नहीं मिली मदद, भारी आर्थिक झटका मोल्ड हटाने का खर्च करीब 10,000 डॉलर (लगभग 8.3 लाख रुपये) आया और बीमा कंपनी ने इस पर कोई सहायता नहीं दी। सारा और कॉलिन को अपने लगभग 90त्न घरेलू सामान को भी फेंकना पड़ा क्योंकि वह भी फंगस से प्रभावित हो चुका था। सारा घर से काम करती थीं और ज्यादा समय घर के अंदर बिताती थीं, जबकि उनके पति ऑफिस जाते थे। यही वजह रही कि सारा की सेहत पर असर पड़ा लेकिन कॉलिन को कोई लक्षण नहीं हुए। हालात ऐसे हो गए कि सारा को अपने पति से अलग रहना पड़ा और कभी मायके तो कभी ससुराल जाकर अस्थायी रूप से रहना पड़ा। जब उन्होंने अपने माता-पिता के घर में रहना शुरू किया तो उनकी तबीयत में सुधार आने लगा।

हूतियों ने दागी नई किस्म की मिसाइल तो इजरायल ने मचा दी तबाही, यमन में 6 की मौत; 86 घायल

काहिरा, एजेंसी।
ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों द्वारा इजरायल पर एक नए किस्म की मिसाइल दागे जाने के बाद इजराइल ने रविवार को यमन की राजधानी सना पर जोरदार हमला बोला। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, यमन की राजधानी सना पर नियंत्रण रखने वाले हूती विद्रोहियों के अनुसार, इन हमलों में कम से कम छह लोग मारे गए हैं और 86 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। इजरायली सेना ने आगे कहा कि उसने एक सैन्य स्थल पर हमला किया, जहाँ राष्ट्रपति भवन स्थित है, साथ ही दो बिजली संयंत्रों और एक ईंधन भंडारण स्थल पर भी हमले किए हैं। इजराइली रक्षा बलों ने कहा है कि

यह हमला इजरायल और उसके नागरिकों पर हूती आतंकवादी शासन द्वारा बार-बार किए जा रहे हमलों के जवाब में किया गया है। इजरायली वायुसेना के एक अधिकारी के अनुसार, इन हमलों में 10 से अधिक लड़ाकू विमानों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि सबसे दूर का लक्ष्य इजरायल से लगभग 2,000 किलोमीटर (1,240 मील) की दूरी पर था। हूतियों द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी ने रविवार को देश के स्वास्थ्य मंत्रालय के हवाले से बताया है कि इजरायली हमलों में बड़े पैमाने पर तबाही हुई है और जान-माल का नुकसान हुआ है। रॉयटर्स की खबर के अनुसार, ईरान समर्थित विद्रोहियों द्वारा इजराइल पर क्लस्टर बम दागे जाने के कुछ ही दिन बाद इजराइल का यह हमला हुआ है। हूती मीडिया कार्यालय ने बताया कि सना के बिजलीघर और गैस स्टेशन समेत कई इलाकों को निशाना बनाया गया। निवासियों ने बताया कि राष्ट्रपति भवन के पास समेत कई इलाकों में धमाकों की तेज आवाज़ें सुनी गईं।

अदालत के एक आदेश के बाद ब्रिटेन में भी अप्रवासियों के मुद्दे पर हंगामा

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन में अदालत के एक आदेश से अप्रवासियों के मुद्दे पर हंगामा हो गया है। दरअसल अदालत ने लंदन उपनगर के एक होटल से शरणार्थियों को निकालने का आदेश दिया है। इस फैसले का विरोध शुरू हो गया तो कई लोग इसके समर्थन में आ गए। इससे हंगामा हो गया है और पुलिस को दोनों पक्षों को नियंत्रित करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका की तरह ब्रिटेन में भी अब अप्रवासियों का मुद्दा राजनीतिक टकराव की वजह बन रहा है। युद्धग्रस्त और गरीब देशों से भारी संख्या में ब्रिटेन में शरणार्थी पहुंच रहे हैं। इंग्लिश चैनल के जरिए अवैध नौकाओं में सवार होकर शरणार्थी ब्रिटेन पहुंच रहे हैं। साथ ही इन शरणार्थियों को सरकारी खर्च पर ठहराने के मुद्दे पर भी तनाव बढ़ रहा है। ब्रिटेन में सरकार शरणार्थियों की अपील पर फैसला होने तक उन्हें अपने खर्च पर ब्रिटेन में ठहराती है, इसके लिए अक्सर होटल्स में शरणार्थियों को ठहराया जाता है। शरण मांगने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब ब्रिटेन की सरकार पर दबाव पड़ रहा है, साथ ही शरणार्थियों का ब्रिटेन में विरोध भी शुरू हो गया है। हालात से निपटने के लिए ब्रिटेन की सरकार ने शरणार्थियों की अपील पर सुनवाई तेज करने का फैसला किया है, ताकि सरकारी खर्च पर ब्रिटेन में रह रहे लोगों को वापस भेजा जा सके। इसके लिए बैकलॉग को भी खत्म किया जा रहा है।

कलेक्टर ने साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक में दिए निर्देश

आदि कर्मयोगी अभियान और रजत महोत्सव को दें प्राथमिकता

कोण्डागांव। कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा बैठक ली। बैठक में उन्होंने आदि कर्मयोगी अभियान और रजत महोत्सव को प्राथमिकता देते हुए इसके बेहतर क्रियान्वयन हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही लगातार बारिश को देखते हुए बाढ़ नियंत्रण एवं रोकथाम हेतु सतर्क रहने को कहा। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री जन दर्शन, जन शिकायत पोर्टल एवं कलेक्टर जनदर्शन में प्राप्त आम नागरिकों की शिकायतों पर कार्यवाही की जानकारी ली और लंबित आवेदनों के शीघ्र निराकरण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। बैठक में शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने सभी बीईओ को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु अपने दायित्वों का निर्वहन गंभीरता के साथ करें। श्रम विभाग से श्रम पंजीयन की स्थिति की जानकारी ली और ही दीदी ई रिक्शा योजना से अधिक से अधिक महिलाओं को लाभान्वित करने हेतु निर्देशित किया। स्वास्थ्य विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने मलेरिया उन्मूलन पर जोर देते हुए इसके रोकथाम के लिए सतत जांच के साथ प्रभावी उपाय करने हेतु स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही सभी एंबुलेस के आवश्यक रख-रखाव के साथ समुचित संचालन सुनिश्चित करने को कहा। कलेक्टर ने उच्च जोखिम वाले गर्भवती महिलाओं की पहचान प्राथमिकता के साथ समय पर करने हेतु निर्देशित किया। इसके अलावा संस्थागत प्रसव, एमआर वैक्सीनेशन, आयुष्मान कार्ड में प्रगति लाने एवं रेडक्रॉस सोसायटी की सदस्यता बढ़ाने पर के संबंध में भी निर्देश दिए। जिले में निर्माणाधीन विद्यालय, आश्रम, छात्रावास एवं अस्पताल के भवनों सहित विभिन्न निर्माण कार्यों की भी कलेक्टर ने विस्तृत समीक्षा की और संबंधित निर्माण एजेंसियों को समयबद्ध तरीके से गुणवत्तापूर्ण कार्य हेतु निर्देशित किया।

उन्होंने केशकाल बायपास निर्माण, नारायणपुर व कोडागांव राष्ट्रीय राजमार्ग और रेलवे लाईन से संबंधित अब तक की प्रगति की भी जानकारी ली।

बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना के स्वीकृत कार्यों के निर्माण में प्रगति लाने हेतु निर्देशित किया और एग्रीस्टैक पोर्टल में किसानों के पंजीयन की प्रगति की समीक्षा सहित अन्य विषयों पर चर्चा हुई।

शहर में जलभराव का जायजा लेने निकले महापौर

जगदलपुर। लगातार हो रही तेज बारिश से शहर के कुछ हिस्सों में जलभराव की स्थिति पैदा हुई है। सुबह से ही महापौर संजय पाण्डे अपनी टीम के साथ प्रभावित क्षेत्रों का जायजा लेने निकले। महादेव घाट, धरमपुरा सहित कुछ इलाकों में तेज बारिश से जल भराव की स्थिति उत्पन्न हुई है। वहीं साईं मंदिर परिसर में भी जलभराव की समस्या सामने आई। महापौर के साथ नगर निगम अध्यक्ष खेमसिंह देवांगन, एमआईसी सदस्य, पार्षदगण सहित नगर निगम का अमला मौजूद रहा। महापौर ने पानी निकासी की व्यवस्था करने और नालियों की सफाई के लिए कहा। वहीं बरसात के दिनों में नागरिकों को किसी तरह की असुविधा न हो, इसके लिए नगर निगम की टीम को पुरी तैयारी के साथ मुस्तैद रहने के लिए कहा है। इस बीच आगामी गणेश उत्सव को ध्यान में रखते हुए महापौर संजय पांडे अपनी पूरी टीम के साथ प्रभावित इलाकों और विसर्जन स्थलों का निरीक्षण करने भी पहुंचे थे। महापौर संजय पाण्डे ने मौके पर पहुंचे अधिकारियों से कहा कि नालियों की तुरंत सफाई की जाए और जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उनके साथ नगर निगम अध्यक्ष खेमसिंह देवांगन, एमआईसी सदस्य निर्मल पाणिग्रही, लक्ष्मण झा, राणा घोष, संजय विश्वकर्मा, आयुक्त प्रवीण कुमार वर्मा, पार्षद दिलीप दास, नगर निगम के दिलीप मरकाम और योगेश पांडे मौजूद थे। महापौर ने कहा कि बरसात के दिनों में नागरिकों को किसी तरह की असुविधा न हो, यह नगर निगम की जिम्मेदारी है। इसके लिए अधिकारियों को पूरी मुस्तैदी से काम करना होगा। गणेश उत्सव अब शहर की गली-गली तक पहुंच चुका है। ऐसे में विसर्जन स्थलों पर सुरक्षा, साफ-सफाई और प्रकाश व्यवस्था सुचारु रहे इसके लिए भी महापौर ने निगम के कर्मचारियों से उचित व्यवस्था करने को कहा।

किरंदुल में महिलाओं द्वारा रखा गया हरतालिका पर्व तीज व्रत

किरंदुल। लौहनगरी किरंदुल के विभिन्न स्थान धरमपुर कैम्प, रामपुर कैम्प, मेन मार्केट, डबल स्टोरी व्होरा कैम्प में अखंड सौभाग्य का व्रत हरतालिका तीज व्रत हर्षोल्लास सहित मनाया गया। मंगलवार रात महिलाओं द्वारा व्रत पूर्ण कर जलग्रहण किया गया। बता दें हरतालिका तीज व्रत कुमारी और सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं।हरतालिका तीज व्रत निराहार और निर्जला किया जाता है।मान्यता है कि इस व्रत को सबसे पहले माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए किया था। हरतालिका तीज व्रत करने से महिलाओं को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। पति की लंबी आयु सुख-शांति और प्रगति के लिए इस व्रत को किया जाता है ऐसी मान्यता है की इस व्रत को विवाहित महिलाएं मायके जाकर करती है।

महिलाओं का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख व्रत में से एक है,जिसे घर परिवार समाज पारा मोहल्लों में एक साथ मनाते हैं।

दो स्कूली छात्रों का अब तक पता नहीं एक ग्रामीण का शव घाट में मिला कृष्ण को रेस्क्यू किया गया

बीजापुर। जिले में लगातार मूसलाधार बारिश हो रही है जिसके चलते नदी नाले तूफान पर है इस बीच गंगालूर के चेरपाल नदी में बाढ़ आने से कई गांव के संपर्क जिला मुख्यालय से टूट चुके हैं बाढ़ के चलते नदी के दोनों तरफ फंसे हुए हैं कई लोग नदी के किनारे बसे गांव में मकान में खाली कराया जा रहा है जहां धीरे-धीरे पानी घरों में घुसता जा रहा है । दरअसल बीजापुर जिले से देर रात से भारी वर्षा की स्थिति बनी हुई है। जिसके कारण कई गांव का जिला मुख्यालय से संपर्क टूटा हुआ है । प्रशासन भी अलर्ट होकर नदी किनारे बसे गांव के मकान खाली कर रहे हैं वहीं दूसरी और मेडिकल सेवा भी बंद है नदी में बाढ़ आने के कारण वाहनों की आवाजाही पूरी तरह बंद है कई जगह नदी नाले तूफान पर है कई मार्ग सुबह से बंद है वहीं दूसरी ओर इंद्रावती नदी घाट में फंसे कृष्ण को प्रशासन की टीम ने रेस्क्यू करके निकाल लिया है । जिसमें जिले के विधायक विक्रम शाह मांडवी खुद घटनास्थल पर मौजूद रहे काफी मेहनत के बाद एनडीआरएफ की टीम ने कृष्ण को निकाल हैं । वही कल नवा पलटने से दो स्कूली छात्र अब तक लापता है एक ग्रामीण का शव पुलिस व एनडीआरएफ की टीम ने बरामद किया है । देर रात की बारिश ने पूरे जिले में अफरा तफरी मची हुई है कई ग्रामीण क्षेत्र इस समय पानी से डूबे हुए हैं ।

अंडर-19 का ट्रायल 30 अगस्त को

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अंडर 19 प्लेट ग्रुप एक दिवसीय (50-50 ओवर) एवं टेस्ट मैच प्रतियोगिता हेतु बस्तर जिला किक्रेट संघ जगदलपुर द्वारा बस्तर जिले के टीम के लिये ट्रायल शनिवार दिनांक 30 अगस्त 2025 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस किक्रेट स्टेडियम कालीपुर में प्रातः 09:00 बजे से लिया जायेगा। इच्छुक खिलाड़ी सफेद पोशाक एवं स्वयं के किट के साथ आवें। जिन्होंने अपना पंजीयन नहीं कराया है, वे अपना पंजीयन ट्रायल दिनांक को रजिस्टेशन फार्म के साथ पिछले 6 वर्ष की अंकसूची, पीवीसी आधारकार्ड, मेन्यूल जन्म प्रमाण पत्र डिजीटल, 2 कलर फोटो पासपोर्ट साईज वर्तमान की, पेनकार्ड, ब्लड ग्रुप सर्टिफिकेट, निवास प्रमाण पत्र संलग्न कर जमा कर सकते है या ट्रायल के बाद भी जमा कर सकते हैं। अंडर-19 का कटआफ दिनांक 1 सितम्बर 2007 रहेगा। चयनकर्ता प्रदीप गुहा, शाहिद खान, रविन्द्र ठाकुर, विवेक राय, टोनी बारला होंगे तथा बस्तर जिला किक्रेट के कोच करणदीप सिंह को भी उपस्थित रहने कहा गया है। ट्रायल में छत्तीसगढ स्टेट संघ रायपुर से पर्यवेक्षक उपस्थित रहेंगे, उनकी उपस्थिति में ट्रायल लिया जायेगा। ट्रायल के दौरान जिला क्रिक्रेट संघ के पदाधिकारी/सदस्यगण आंनद मोहन मिश्रा, राज कुमार महतो, शिवनारायण महंती, विश्वमोहन मिश्र, अनूप मेहरा, सुशील चौहान, संतोष झा उपस्थित रहेंगे।

केंद्रीय विद्यालय एवं 188 सीआरपीएफ बटालियन कोण्डागांव में साइबर जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से किया गया जागरूक

कोण्डागांव। सायबर जागरूकता के सम्बन्ध में एस.ओ.पी. जारी किया गया है। जिसके परिपालन में पुलिस अधीक्षक कोंडागांव वाय अक्षय कुमार के निर्देशानुसार, कोण्डागांव जिले में साइबर जागरूकता का कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में 26 अगस्त 2025 को पीएम केंद्रीय विद्यालय एवं 188 सीआरपीएफ बटालियन कोण्डागांव में साइबर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराधों से सुरक्षित रहने के लिए जागरूक करना है। कार्यक्रम के दौरान अति. पुलिस अधीक्षक कौशलेंद्र देव पटेल के द्वारा साइबर अपराध के संबंध में जानकारी दी गई उनके द्वारा बताया गया कि आज हर व्यक्ति, बच्चे, बूढ़े सभी मोबाईल फोन व इंटरनेट का उपयोग कर रहे है। कल सायबर क्रिमिनल, सोशल मीडिया प्लेट फार्म के माध्यम से झूठी फेक प्रोफाईल बना कर नये-नये तरीके से लोगों से ठगी अथवा अन्य अपराध कर रहें है। सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाले प्रमुख अपराध जैसे सायबर बुलिंग, सायबर स्टाकिंग, सायबर ग्रुमिंग, चाईल्ड पोंनो ग्राफी के संबंध में बताया गया, इसके अलावा वर्तमान में चल रहे शेयर मार्केट फ्रॉड, ट्रेडिंग एप्प, सेक्सटॉर्शन एवं सोशल मीडिया के माध्यम से फेक प्रोफाईल जैसे पुलिस अधिकारी, सीबीआई अधिकारी या अन्य कानूनी एजेंसी के नाम से लोगों अथवा उनके बच्चों को गैर कानूनी गतिविधियों में शामिल होना बताकर भयभीत कर, केश समाप्त करने हेतु पैसो की मांग करना, इसी बहाने विडियों कॉल के जरिये डिजिटल अरेस्ट करने की धमकी देकर लोगों से पैसे ठगी करने के संबंध में बताया गया। साथ ही उपस्थित छात्रा छात्राओं, सीआरपीएफ के अधिकारी कर्मचारी को सायबर फ्रॉड से बचने हेतु किसी प्रकार के लालच में न आने, अनजान व्यक्तियों से सोशल मीडिया में न जुड़ने हेतु बताया गया।

कोण्डागांवराज्य पुरस्कार जांच परीक्षा शिविर में सराहनीय प्रदर्शन कर लौटे कोण्डागांव के रोवर : रेंजर

कोण्डागांव। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, छत्तीसगढ़ राज्य के तत्वावधान में राज्य प्रशिक्षण केंद्र झांकी में 18 से 21 अगस्त 2025 तक राज्य पुरस्कार रेंजर जांच शिविर 2025, एवं 22 से 25 अगस्त 2025 तक राज्य पुरस्कार रोवर जांच शिविर का भव्य एवं सफल आयोजन संपन्न हुआ।

इस चार दिवसीय शिविर में कोण्डागांव सहित प्रदेश के 17 जिलों से चयनित कुल 171 रेंजर्स एवं 123 रोवर्स ने सक्रिय रूप से सहभागिता की। शिविर के शुभारंभ अवसर पर शिविर संचालक एवं राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) विजय यादव ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि ÷राज्य पुरस्कार परीक्षण न केवल स्काउटिंग का राज्य स्तर पर सर्वोच्च गौरव है, बल्कि यह अनुशासन, सेवा और नेतृत्व क्षमता का प्रतीक भी है। चार दिवसीय इस शिविर में प्रवेश पाठ्यक्रम से लेकर राज्य पुरस्कार पाठ्यक्रम तक की सभी गतिविधियों का सुव्यवस्थित संचालन एवं परीक्षण किया गया। प्रतिभागियों का लिखित, मौखिक एवं प्रायोगिक परीक्षण किया गया, जिसमें प्राथमिक चिकित्सा, गांठें व बंधन की तकनीक, पायनियरिंग, सामुदायिक सेवा, आपातकालीन प्रबंधन, ध्वज शिष्टाचार, मानचित्र अध्ययन, व्यक्तिगत विकास एवं नेतृत्व प्रशिक्षण जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियाँ सम्मिलित रहीं। मुख्य परीक्षक के रूप में सूरज कसार ने पूरे शिविर में मार्गदर्शन प्रदान किया। सहायक परीक्षक के रूप में मयूक श्रीवास्तव, दिलीप पटेल, विभूति भूषण गुप्ता एवं धनुष सिन्हा ने विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता के साथ प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया। वहीं राज्य पुरस्कार रेंजर जांच शिविर के शिविर संचालक शिवानी गणवीर रहे। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ जिला संघ कोण्डागांव से रेंजर लीडर कुमकुम सोरी के नेतृत्व में 14 रेंजर एवं शैलेन्द्र कुमार सोनभद्र के नेतृत्व में 18 रोवर स्काउट ने जिले से सफलता पूर्वक भाग लिया। शिविर का मुख्य आकर्षण अंतिम दिवस पर राज्य मुख्य आयुक्त डॉ. सोमनाथ यादव का आगमन रहा। इस अवसर पर आयोजित ओपन सेशन में उन्होंने प्रतिभागी रोवर्स से संवाद स्थापित करते हुए उनके अनुभवों को जाना और उन्हें स्काउटिंग के आदर्शों पर दृढ़ रहने की प्रेरणा दी। साथ ही सभी परीक्षार्थियों को उनकी सफलता के लिए शुभकामनाएं एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वचन प्रदान किए। शिविर के समापन अवसर पर शिविर संचालक विजय यादव ने सभी परीक्षकों, सहयोगी स्टाफ एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे शिविर युवाओं में नेतृत्व, सेवा भावना और राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा को सशक्त करते हैं।

अनिश्चितकालीन हड़ताल से जिले के स्वास्थ्य सेवाएं हो रही प्रभावित

- बीजापुर के विधायक विक्रम मंडावी ने मितानिनों के मांगों के समर्थन में सीएम विष्णुदेव साय को लिखा चिट्ठी

बीजापुर। बीजापुर जिले के मितानिन संघ का एक प्रतिनिधिमंडल ने कांग्रेस नेता और बीजापुर के विधायक विक्रम मंडावी को अपनी मांगों के समर्थन में ज्ञापन सौंपा है। मितानिन संघ द्वारा विधायक विक्रम मंडावी को सौंपे गए ज्ञापन में भाजपा सरकार के चनावी घोषणा पत्र 2023 में मितानिन कार्यक्रम के लिए घोषणा किया गया था कि मितानिन कार्यक्रम में कार्यरत मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर एवं ब्लाक कोऑर्डनेटर को एन.एच.एम. अंतर्गत संविलयन किया जाएगा। किंतु इसके विपरीत प्रशासन द्वारा पुनः मितानिन कार्यक्रम संचालन हेतु एन.जी.ओ. (नई दिल्ली की संस्था) को दे दिया गया है जिससे सभी मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर एवं ब्लाक कोऑर्डनेटर निराश होकर प्रदेश स्वास्थ्य मितानिन संघ अपने लंबित मांगों को लेकर मितानिन कार्यक्रम के मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर एवं ब्लाक कोऑर्डनेटर द्वारा प्रदेश स्वास्थ्य मितानिन संघ एवं प्रिशक्षक कल्याण संघ के आहवान पर प्रदेश स्तरीय अनिश्चतकालीन काम बंद कलम बंद कर हड़ताल एवं धरना प्रदर्शन किये जाने का निर्णय लिया गया है। विधायक विक्रम मंडावी को सौंपे ज्ञापन में संघ ने आगे कहा कि पूर्व में मितानिन संघ द्वारा शासन का ध्यान आकर्षण के लिए अपनी मांगों को लेकर दिनांक 13 दिसंबर 2024 से अनिश्चतकालीन हड़ताल किया गया था किंतु संचालक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा जानकारी दिया गया कि शासन द्वारा हमारी मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जा रहा है । किंतु अब तक हमारी मांगों पर शासन द्वारा विचार ना किए जाने पर एवं पिछले 13 माह से हमारा वेतन/क्षितपूर्ति भुगतान 3-4 माह के अंतराल में किए जाने पर संघ द्वारा पुनः दिनांक 29/07/25 को एक दिवसीय राज्य स्तरीय सांकेतिक धरना प्रदर्शन एवं 7 अगस्त से अनिश्चतकालीन काम बंद कलम बंद कर प्रदेश स्तरीय हड़ताल एवं धरना प्रदर्शन ग्राम तूता, नवा रायपुर में जारी है।हड़ताल कर रहे मितानिन संघ ने विधायक विक्रम मंडावी को सौंपे ज्ञापन में, 1. भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा पत्र 2023 में किया गया वादा मितानिन कार्यक्रम में कार्यरत मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर, ब्लाक कोऑर्डनेटर को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एन.एच.एम.) अंतर्गत संविलियम के वादे को पूरा करे। 2. भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा पत्र 2023 में किया गया वादा कि मितानिन कार्यक्रम में कार्यरत मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर एवं ब्लाक कोऑर्डनेटर के वेतन क्षितपूर्ति में 50 प्रितशत वृद्धि किया जाएगा, शासन यह वादा जल्द पूरा करे। 3. मितानिन कार्यक्रम में कार्यरत मितानिन, मितानिन प्रिशक्षक, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर एवं ब्लाक कोऑर्डनेटर एन.जो. ओ. अंतर्गत कार्य नहीं करेंगे। शासन द्वारा ठेका प्रथा बंद करने जैसे तीन प्रमुख मांगे रखी है। वही कांग्रेस नेता और बीजापुर के विधायक विक्रम मंडावी ने भी मितानिन संघ के समर्थन में एक चिट्ठी प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को लिखा है जिसमें उन्होंने प्रदेश की डबल इंजन की सरकार के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को लिखे चिट्ठी में मांग करते हुए कहा है कि ÷विधानसभा क्षेत्र क्रमांक-89 बीजापुर के अन्तर्गत प्रदेश स्वास्थ्य मितानिन संघ जिला-बीजापुर के तत्वाधान में दिनांक 7 अगस्त से एन.एच.एम. अंतर्गत संविलियन करने की मांग पर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर बैठें है। स्वास्थ्य मितानिन कर्मचारी बीजापुर जिले के अपने कार्यक्षेत्र में विषम परिस्थितियों में काम करते है और गांव में मरीजों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। स्वास्थ्य मितानिन कर्मचारी अनिश्चित कालीन हड़ताल में होने के कारण गांव में स्वास्थ्य सुविधा पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है और मरीजों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, स्वास्थ्य मितानिन कर्मचारी संघ की मांग जायज है इसलिए मितानिन, मितानिन प्रशिक्षक, ब्लॉक कोऑर्डिनेटर, हेल्प डेस्क फैसिलिटेटर को एन.एच.एम. अंतर्गत संविलियन किया जाए।

प्रेमी जोड़े ने फांसी लगाकर की आत्महत्या ग्रामीणों ने दी पुलिस को सूचना

बीजापुर। कपल ने फांसी लगाकर की आत्महत्या सुसाइड से पहले बनाया रील दोनों 15 अगस्त से लापता जिले में एक कपल ने आत्महत्या करने से पहले रील बनाई फिर पेड़ पर लटक कर अपनी जान दे दे नाबालिक मंगलवार को दोनों की लाश जंगल में मिली जो पूरी तरह खराब हो गई थी । यह मामला कोतवाली थाना क्षेत्र बीजापुर का है जानकारी के मुताबिक दोनों 15 अगस्त से लापता थे । मंगलवार को जब ग्रामीण जंगल गए थे तो बदबू आई और बदबू आने पर उन्होंने खोज और देखा तो उन्हें लास लटकती हुई दिखी जिसकी सूचना उन्होंने पुलिस को दी घटना स्तर पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया । जबकि युवक का शव दाहिनी टूट जाने से नीचे गिरा हुआ था। पुलिस को मौके पर आत्महत्या से जुड़े कुछ सुराग भी मिले जिसमें एक मोबाइल फोन शामिल है इस फोन के रिकॉर्ड की गई रेल्स मिली जो आत्महत्या से पहले बनाई गई थी पुलिस ने परिजनों को बुलाकर शव को पहचान कराय पहचान जगदलपुर के तुरंगूर निवासी शंकर मांडवी के रूप में हुई है वही नाबालिक भैरमगढ़ ब्लॉक के रहने वाली है । कोतवाली पुलिस ने बताया कि परिजनों के पहचान के बाद पोस्टमार्टम कर शव को सौंप दिया गया है पुलिस मामले पर जांच कर रही है और मौके पर मिले साक्ष के आधार पर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

किस दिशा में लगाएं दौड़ते घोड़ों की तस्वीर

आप सभी इस बात से तो बखूबी वाकिफ होंगे कि वास्तु हमारे जीवन की कई परेशानियों का समाधान कर देता है और उसके पास आपकी हर परेशानी का अंत है। ऐसे में वास्तु के अनुसार अगर जीवन में तरक्की करनी है और जल्द से जल्द अमीर बनना है तो आपको बता दें कि वास्तु में कई ऐसे उपाय बताए गए हैं, जिनसे जीवन में तरक्की के नए-नए रास्ते खुलते हैं। तो आज इस आर्टिकल में बात करेंगे कुछ ऐसे उपाय के बारे में जिसको करने से जीवन में आसानी से तरक्की मिल जाएगी। वास्तु के अनुसार अगर घर में दौड़ते हुए घोड़े की तस्वीर या पेंटिंग लगाई जाए तो जीवन में तरक्की की राह आसान हो जाती है।

घोड़ों की तस्वीर घर की उत्तर दिशा में ही लगाना शुभ

तस्वीर को आप अपने कार्यालय या अपने व्यवसाय की जगह पर लगा सकते हैं। तस्वीर लगाते समय ध्यान रखें कि दौड़ते सात घोड़ों का मुंह आपके कार्यालय में अंदर की तरफ होना चाहिए। यदि आप इस तस्वीर को अपने कार्यालय में लगा रहे हैं तो दक्षिण दिशा में लगाना शुभ रहेगा। यदि यही तस्वीर आप अपने घर में लगाना चाह रहे हैं तो पूर्व दिशा की तरफ लगाना शुभ होगा। यह तस्वीर आपके कैरियर में तरक्की और मान सम्मान में बढ़ावा देती है। इस तस्वीर को यदि आप अपने घर के हॉल में लगाना चाहते हैं तो इसे दक्षिण दिशा की दीवार पर लगा सकते हैं। यदि आप कार्यक्षेत्र में पदोन्नति का इंतजार कर रहे हैं तो ऐसे में दौड़ते हुए घोड़ों की तस्वीर घर की उत्तर दिशा में ही लगाना शुभ रहेगा।

इन बातों का ख्याल रखना चाहिए

वास्तु शास्त्र के अनुसार यदि आप अपने घर, कार्यालय या व्यापार-व्यवसाय के स्थान पर इस तस्वीर को लगा रहे हैं तो आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस तस्वीर में सभी सात घोड़े साफ-साफ दिखाई दे रहे हों। इसके अलावा इस तस्वीर को लगाते समय यह ध्यान रखें कि इन घोड़ों की लगाम बंधी हुई ना हो। घोड़े प्रसन्न और आनंदित मुद्रा में दिखाई दे रहें हों।

सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं सफेद घोड़ा

घर या ऑफिस में दौड़ते घोड़े लगाना शुभ माना गया है, पर याद रखें कि घोड़ों का रंग सफेद ही होना चाहिए। बता दें कि, सफेद घोड़े सकारात्मक ऊर्जा के प्रतीक होते हैं। यह घर और ऑफिस की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं। लोगों की नजरों में आपका सम्मान बढ़ेगा।

खिड़की पर दौड़ते घोड़ी की मूर्ति रखना भी शुभ

यदि आप दक्षिण दिशा में दौड़ते हुए घोड़ों की पेंटिंग नहीं लगा पा रहे हैं तो घर के मुख्य द्वार की खिड़की पर दौड़ते हुए घोड़ी की मूर्ति रख सकते हैं। यह भी काफी फलदायी माना जाता है। मुख्य द्वार पर इस मूर्ति को लगाते समय ध्यान रहे कि घोड़ी का मुंह खिड़की से बाहर देख रहा हो।

त्वचा को खूबसूरत बनाने के उपाय

पसीना आना आम बात है, ऐसे में शरीर से बदबू आने लगती है। जो कई बार शर्मिंदगी का कारण बन जाती है। परफ्यूम लगाने के बाद भी आपको लगातार पसीना और बदबू आ रही है, तो अब चिंता करने की जरूरत नहीं है। आज हम आपको कुछ ऐसी चीजों के बारे में बताएंगे, जिन्हें पानी में डालकर नहाने से पसीने की बदबू से छुटकारा मिलेगा।

गुलाब जल का इस्तेमाल

नहाते टाइम आप पानी में गुलाब जल डाल सकते हैं। इससे आपके शरीर से बदबू दूर होगी और त्वचा खूबसूरत दिखेगी। इसके अलावा आप नींबू का रस भी पानी में डाल सकते हैं। ऐसा करने से शरीर पर मौजूद बैक्टीरिया मरते हैं और बदबू दूर होती है। अगर आप अपने पास से बदबू दूर करना चाहते हैं और खूबसूरत दिखना चाहते हैं, तो आप नहाने के पानी में चंदन पाउडर भी मिला सकते हैं।

पुदीने की पत्तियां

पुदीने की पत्तियां त्वचा को चमकदार बनाने में मदद करती है और शरीर को गर्मी के मौसम में ठंडक पहुंचती है। यह बदबू पैदा होने वाले बैक्टीरिया को भी मारने में काफी मदद करती है। इसके अलावा आप नहाने के पानी में लैवेंडर तेल डाल सकते हैं, यह त्वचा को सुगंधित बनता है। इन सब चीजों का इस्तेमाल करने से पहले एक बार पैच टेस्ट जरूर करें। अगर ये आपकी स्किन पर सूट नहीं होते हैं, तो आप इनका इस्तेमाल करना बंद कर दें।

इन बातों का रखें ध्यान

इन चीजों को पानी में मिलाकर नहाने से आप पसीने की बदबू से छुटकारा पा सकते हैं। लोकिन ध्यान रहे इन चीजों का सीमित मात्रा में इस्तेमाल करें। जरूरत से ज्यादा उपयोग करने से कुछ लोगों को समस्या हो सकती है। इसके अलावा नहाने के बाद आप चाहे तो शरीर पर मॉइश्चराइजर या लोशन लगा सकते हैं। अगर एलर्जी होता है, तो डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

चाय-कॉफी या कोल्ड ड्रिंक हद से ज्यादा न पिएं

शीतल पेय, कॉफी, चाय और शराब जैसे पेय पदार्थ पीने से निर्जलीकरण हो सकता है। एडवाइजरी में कहा गया है कि हाई प्रोटीन वाला खाना न खाएं। साथ ही स्ट्रीट फूड खाने से भी बचें। घर में खाना बनाते समय दरवाजे और खिड़कियां खुली रखें।सरकार की सलाह में कहा गया है कि शीतल पेय, कॉफी, चाय और शराब जैसे पेय पदार्थ पीने से निर्जलीकरण (पानी की कमी) हो सकता है। एडवाइजरी में कहा गया है कि हाई प्रोटीन वाला खाना न खाएं। साथ ही स्ट्रीट फूड खाने से भी बचें। घर में खाना बनाते समय दरवाजे और खिड़कियां खुली रखें। पर्याप्त पानी पियें। भले ही आपको प्यास न लगे, फिर भी जितनी बार हो सके पानी पियें।हल्के रंग के, ढीले और छिद्रयुक्त सूती कपड़े पहनें। धूप में बाहर जाते समय चश्मा, छाता/टोपी, जूते या चप्पल का प्रयोग करें। जब बाहर का तापमान अधिक हो तो बाहर जाने से बचें। यात्रा करते समय अपने साथ पानी रखें। शराब, चाय, कॉफी और कोल्ड ड्रिंक पीने से बचें। उच्च प्रोटीन वाले भोजन से बचें और बासी भोजन न करें। यदि आप बाहर काम करते हैं, तो टोपी या छाते का उपयोग करें और अपने सिर और चेहरे को हल्के सूती कपड़े से ढकें। यदि आप बेहोश या बीमार महसूस करते हैं, तो तुरंत डॉक्टर से परामर्श लें। ओआरएस, घर पर बने पेय जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का पानी), नींबू पानी, छाछ आदि का उपयोग करें जो शरीर को पुनर्जीवित करने में मदद करते हैं।

बच्चों को समय पर सोना बहुत जरूरी

अगर आपका बच्चा रात में देर तक जागता है और दिन में सोता है, तो यह आपके लिए और आपके बच्चे के लिए थकान भरा हो सकता है। यहां कुछ आसान उपाय दिए गए हैं जो बच्चे को जल्दी सोने में मदद करेंगे।

रोजाना समय पर सुलाएं: हर दिन एक ही समय पर बच्चे को सुलाने की कोशिश करें। इससे उनका शरीर उस समय के हिसाब से आदत डाल लेगा और वे आसानी से सो जाएंगे।

खेल-कूद का समय बढ़ाएं: दिन में बच्चे को खूब खेलने दें। खेलने से उनकी ऊर्जा खर्च होती है और वे थक कर रात में अच्छी तरह से सो पाते हैं।

शांत संगीत सुनाएं: सोने से पहले बच्चे को शांत संगीत सुनाना फायदेमंद हो सकता है। यह उन्हें शांत करता है और सोने में मदद करता है।

गैजेट्स से दूर रखें: सोने से पहले बच्चे को टीवी, मोबाइल फोन और अन्य स्क्रीन से दूर रखें। इनकी रोशनी और गतिविधियां नींद को खराब कर सकती हैं।

सोने से पहले करें ये काम : बच्चे को नियमित रूप से सोने से पहले नहलाना, हल्की मसाज देना शामिल करें। यह उन्हें सोने के लिए तैयार करता है और उन्हें अच्छी नींद आने में मदद करता है।

दाल-चावल के 5 फायदे

अगर आप भी चावल-दाल के शौकीन है तो ये खबर आपके लिए है। ज्यादातर भारतीयों का पसंदीदा और सबसे आराम से बन जाने वाला दाल-चावल वजन कम करने के लिए सबसे अच्छा फूड है। इसके अलावा दाल-चावल खाने से कई और फायदे मिलते हैं। बहुत से लोगों को लगता है कि दाल-चालव खाने से वजन तेजी से बढ़ता है लेकिन ऐसा नहीं है। दाल में मौजूद प्रोटीन और चावल का फाइबर मिलकर वेट लॉस में मददगार होते हैं। यहां जानिए दाल-चावल खाने के 5 फायदे...

1.मांसपेशियां-टिशू रिपेयर का काम

दाल खाने से शाकाहारी लोगों को अच्छी-खासी मात्रा में प्रोटीन मिल जाता है लेकिन हाई प्रोटीन के लिए तुअर, मूंग या चना दाल ही खाना चाहिए। शरीर में अच्छी मात्रा में प्रोटीन मिलने से मांसपेशियों का निर्माण और टिशू रिपेयर करने में मदद मिलती है। इसके साथ ही स्टीम राइस से गुड कार्ब्स शरीर को मिलते हैं।

2. पोषक तत्वों का खजाना

डाइटिशियन के मुताबिक, एक कप सफेद चावल में रोजाना की जरूरत का 37 प्रतिशत मैंगनीज और 17 परसेंट सेलेनियम होता है। वहीं, 4 बड़े चम्मच अगर दाल ले ली जाए तो उसमें 12 फीसदी मैंगनीज, 8 प्रतिशत आयरन और 20 परसेंट फोलेट शरीर को मिल जाता है। दाल-चावल बी कॉम्प्लेक्स विटामिन के लिए भी अच्छा फूड है।

3.पाचन बनाए जबरदस्त

दाल-चावल दोनों में फाइबर खूब पाया जाता है। इसे खाने से कब्ज जैसी समस्याएं दूर होती हैं। अगर दाल का तड़का हींग और जीरा से लगाया जाए तो मेटाबॉलिज्म तेज होगा और पाचन काफी मजबूत होगा।

4. संपूर्ण भोजन

दाल में कई तरह के जरूरी अमीनो एसिड पाए जाते हैं जो सिर्फ खाने से ही मिल सकता है। यही कारण है कि दाल-चावल को संपूर्ण भोजन माना जाता है, क्योंकि इससे ज्यादा अमीनो एसिड मिलता है, जो सेहत के लिए आवश्यक होते हैं।

5. क्रेविंग कंट्रोल करे

दाल-चावल खाने से पेट काफी समय तक भरा-भरा रहता है। इसकी वजह से एक्स्ट्रा कैलोरी से शरीर बच जाता है। इसके साथ ही फाइबर और प्रोटीन की वजह से शरीर का वजन भी कंट्रोल रहता है। इससे वजन बढ़ नहीं पाता है और मोटापे जैसी समस्याएं भी नहीं होती हैं।

अक्सर सब्जियां जल्दी खराब हो जाती हैं। इससे न सिर्फ सब्जियों का स्वाद बिगड़ता है बल्कि उनके पोषक तत्व भी कम हो जाते हैं। लेकिन, थोड़ी सी सावधानी और कुछ आसान टिप्स को अपनाकर आप गर्मियों में भी अपनी सब्जियों को फ्रेश और ताजा रख सकते हैं। आज हम आपको बताएंगे कि कैसे आप सब्जियों को सही तरह से स्टोर कर सकते हैं और क्या करें कि उनकी ताजगी लंबे समय तक बनी रहे। चलिए जानते हैं कुछ आसान टिप्स..

सब्जी फ्रेश रखने के लिए उपाय

सब्जियों को सूखा रखें

सब्जियों को धोने के बाद हमेशा अच्छे से सुखा लें, क्योंकि अगर वे गीली रहेंगी, तो जल्दी खराब हो सकती हैं। इसलिए, उन्हें पूरी तरह से सुखाने के बाद ही फ्रिज में रखें। यह सब्जियों को लंबे समय तक ताजा रखने में मदद करता है।

फ्रिज का सही इस्तेमाल

अपने फ्रिज का तापमान हमेशा 1 से 4 डिग्री सेल्सियस के बीच रखना चाहिए। यह तापमान सब्जियों के लिए बिल्कुल सही होता है और उन्हें ज्यादा दिन तक ताजा रखने में मदद करता है। इस तापमान पर रखने से सब्जियां ना सिर्फ ताजा रहती हैं बल्कि उनका स्वाद और पोषक तत्व भी बचे रहते हैं। इसलिए, फ्रिज के तापमान को सही सेट करना बहुत जरूरी है, ताकि आपकी सब्जियां हमेशा फ्रेश और स्वादिष्ट बनी रहें।

सब्जियों को खोलकर रखें

सब्जियों को एक-दूसरे के ऊपर मत रखें। उन्हें थोड़ी दूरी पर रखो ताकि हवा अच्छे से उन तक पहुंचे। इससे सब्जियां ज्यादा दिन तक फ्रेश रहेंगी। जब सब्जियां अच्छे से हवा में रहती हैं तो वे लंबे समय तक अच्छी रहती हैं और उनके स्वाद और पोषक तत्व भी बचे रहते हैं।

अलग-अलग स्टोर करने का तरीका

कुछ सब्जियां जैसे टमाटर और खीरा, फ्रिज में नहीं रखनी चाहिए। इन्हें बेहतर है कि कमरे के तापमान पर रखें। अगर ये सब्जियां बहुत ठंड में रखी जाएं तो ये जल्दी खराब हो सकती हैं।

पेपर टॉवेल का प्रयोग

सब्जियों को पेपर टॉवेल में लपेटें। यह उनसे अतिरिक्त नमी को सोख लेगा और उन्हें लंबे समय तक फ्रेश रखेगा। ये सभी टिप्स आपकी सब्जियों को गर्मियों में भी ताजा रखने में मदद करेंगे। इन्हें अपनाकर आप अपने खाने को हेल्दी और स्वादिष्ट बना सकते हैं।

मिट्टी के घड़े का पानी हेल्थ के लिए अच्छा

अगर आप घड़े और सुराही का पानी पीते हैं, तो यह जानना जरूरी है कि उनकी सफाई किस तरह से करनी चाहिए। घड़े और सुराही का पानी न सिर्फ ठंडा रहता है बल्कि यह पानी पीने में भी स्वादिष्ट लगता है हालांकि, अगर इनकी सही से सफाई न की जाए तो इससे पानी में कीटाणु ब ढ़ सकते हैं जो आपको बीमार भी कर सकते हैं।

रोजाना सफाई करें:

हर रोज सुराही या घड़े को खाली करें और गर्म पानी से अच्छी तरह से धोएं। इससे अंदर जमा गंदगी और कीटाणु निकल जाएंगे।

ब्रश का उपयोग करें:

एक लंबे हैंडल वाला ब्रश लें जो घड़े या सुराही के अंदर तक पहुंच सके। इससे अंदर की सतहों को अच्छी तरह से साफ किया जा सकता है।

विनेगर का उपयोग करें:

महीने में एक बार विनेगर और पानी का मिश्रण बनाकर उससे घड़े या सुराही को धोएं। विनेगर कीटाणुनाशक होता है और यह गंध को भी दूर करता है।

बेकिंग सोडा का उपयोग :

एक कटोरी में एक चमच बेकिंग सोडा, एक बड़ा चमच सफेद सिरका और थोड़ा सा नमक मिलाकर एक घोल बना लें। इसे घड़े में डालें और ब्रश से रगड़ें।

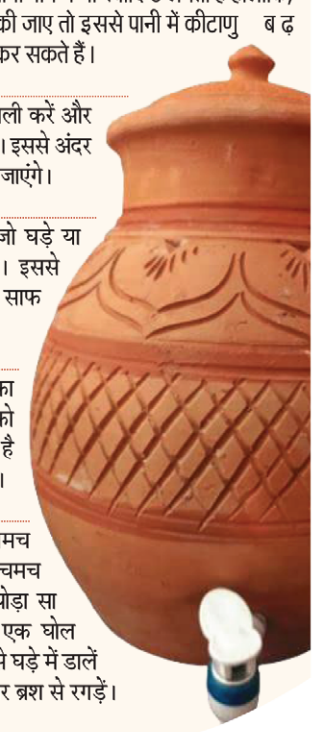

घर सजाने के यूनिक तरीके

हम सभी चाहते हैं कि हमारा घर दिखने में फ्रेश और सुंदर रहे। लेकिन, हर बार नई चीजें खरीदना और बड़े बजट में घर सजाना संभव नहीं होता। इसलिए, आज हम आपको कुछ ऐसे खास और सस्ते तरीके बताएंगे जिससे आप अपने घर को बहुत ही कम खर्च में खूबसूरत बना सकते हैं। ये तरीके न सिर्फ आसान हैं, बल्कि इनसे आपके घर में एक नई रौनक भी आएगी। चलिए जानते हैं कि आप किस तरह से अपने घर को गर्मियों में सजा सकते हैं।

पुरानी चीजों का इस्तेमाल

अपने पुराने जार, बोतल और फोटो फ्रेम को नए रंग से पेंट करें। फिर इन्हें घर में अलग-अलग जगहों पर सजा कर रखें। इस सिंपल से तरीके से आपका घर खूबसूरत और नया लगेगा। यह तरीका बहुत ही सस्ता और आसान है, और घर को बहुत ही सुंदर बना देता है।

दीवार पर पेंटिंग

अपने घर की दीवारों पर खुद से पेंटिंग करें। आप फूल, पत्तियां या कोई सिंपल डिजाइन बना सकते हैं। यह काम बहुत ही आसान है और इससे आपके घर की दीवारें और भी सुंदर दिखने लगेंगी। इस सस्ते तरीके से आप अपने घर को नया और खूबसूरत बना सकते हैं।

पौधे लगाएं

अपने घर में कुछ छोटे पौधे लगाएं। ये पौधे न केवल घर की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि वे हवा को भी साफ करते हैं। यह बहुत ही सस्ता और आसान तरीका है अपने घर को खूबसूरत और ताजगी से भरा रखने का। पौधे लगाने से घर में एक अच्छा माहौल बनता है।

लाइट कलर का इस्तेमाल

घर को सुंदर और ठंडा रखने के लिए हल्के रंग के पर्दे और कपड़े इस्तेमाल करें। ये कपड़े सूरज की तेज रोशनी को कम करते हैं और घर को ठंडा रखते हैं, जिससे आपका घर खूबसूरत और आरामदायक रहता है।

लाइट्स बदलें

अपने घर में छोटी और हल्की लाइट्स लगाएं और इन्हें घर के हर कोने में रखें। ये सिंपल लाइट्स घर में एक खूबसूरत माहौल बनाती हैं। यह तरीका न सिर्फ आसान है बल्कि बहुत ही सस्ता भी है, और इससे आपका घर और भी ज्यादा सुंदर दिखेगा।

खिड़कियों में लगे कांच सफाई टिप्स

अगर आपके घर की खिड़कियों में लगे कांच या कोई और कांच गंदे और धूल से भरे दिख रहे हैं, तो परेशान न हों। कांच को साफ करना कभी-कभी मुश्किल लग सकता है, खासकर जब वे पुराने और धुंधले नजर आने लगें। लेकिन, हम आपको बताएंगे बहुत ही सिंपल और काम के टिप्स, जो आपके कांच को झटपट चमका देंगे, वो भी बस 2 मिनट में। इन आसान उपायों से आपके कांच न केवल साफ हो जाएंगे बल्कि आपका घर भी ज्यादा साफ-सुथरा और खूबसूरत दिखेगा।

सिरका और पानी का मिश्रण

कांच की सफाई के लिए, एक स्प्रे बोतल में सिरका और पानी को समान मात्रा में मिला लें। इस साधारण सफाई समाधान को गंदे कांच पर छिड़कें। उसके बाद, एक साफ माइक्रोफाइबर कपड़े की मदद से हल्के हाथों से पोंछ दें। यह आसान तरीका कांच को बिना किसी खरोंच के साफ कर देती है, जिससे वह फिर से चमकने लगता है।

न्यूजपेपर का प्रयोग

कांच को चमकाने के लिए सिरका और पानी का मिश्रण बनाकर उससे कांच साफ करें। इसके बाद, एक पुराने अखबार का टुकड़ा लेकर कांच पर अच्छे से रगड़ें। ये तरीका कांच को बहुत चमकदार बना देता है।। बस, इतना करने से ही आपके कांच फिर से नए जैसे चमकने लगेंगे।

बेकिंग सोडा का उपयोग

कठिन दागों को हटाने के लिए, बेकिंग सोडा और थोड़े पानी से एक गाढ़ा पेस्ट तैयार करें। इस पेस्ट को दाग वाले स्थान पर लगाएं और उसे कुछ मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दें। यह पेस्ट दाग को सोख लेगा। कुछ समय बाद, एक साफ कपड़े से इसे अच्छी तरह साफ कर दें। यह तरीका दागों को आसानी से हटा देगा और आपके कांच को फिर से नई जैसी चमक देगा।

दूध को फटने से बचाने के ट्रिक्स

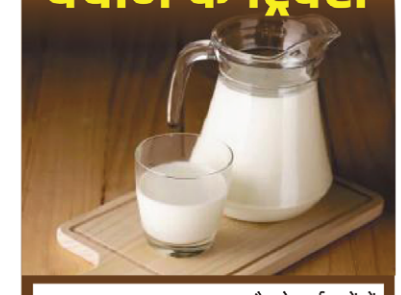

दूध फटना एक आम समस्या है जो कई घरों में देखी जाती है। यह न केवल दूध की बर्बादी का कारण बनता है बल्कि कई बार खाने-पीने की अन्य तैयारियों में भी बाधा डालता है। लेकिन, कुछ आसान उपायों को अपनाकर आप इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

1.ठंडा करने का तरीका:दूध को उबालने के बाद तुरंत ठंडे स्थान पर रखें। आप दूध के बर्तन को पानी से भरे बड़े बर्तन में रख सकते हैं ताकि दूध जल्दी ठंडा हो जाए।

2.खाने का सोडाः दूध में थोड़ा सा खाने का सोडा मिलाने से भी दूध फटने की संभावना कम हो जाती है। इसे बहुत कम मात्रा में इस्तेमाल करें।

3.फ्रिज में रखेंः गर्मी के दिनों में दूध को जल्दी फ्रिज में रख दें और बाहर निकालने के बाद तुरंत उपयोग करें। यह दूध को ज्यादा देर तक ताजा रखेगा।

जोशना ने नीट में किया बेहतर प्रदर्शन, एमबीबीएस करने शासकीय मेडिकल कॉलेज में मिली फ्री सीट

श्री साईनाथ जन सेवा समिति ने किया जोशना का सम्मान

■ उपलब्धि का श्रेय माता,पिता और शिक्षकों को दिया

भिलाई। श्री साईनाथ जन सेवा समिति के सलाहकार जी. जगन्नाथ राव व श्रीमती जी. सरिता जी की सुपुत्री कु. जी. जोशना ने एमबीबीएस के ह्रश्वश्वज्ञ यूजी परीक्षा में अच्छे रैंक लाकर एमबीबीएस. के लिए शासकीय कॉलेज पंडित जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, रायपुर में फ्री सीट प्राप्त करने पर संस्था कु. जी. जोशना को उनके निवास जाकर शॉल श्रीफल व मोमेंटो से सम्मानित किया और जोशना व उनके परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएं दिये। संस्था के अध्यक्ष जी. माधव राव ने कहा कि आपकी कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है। हमे आप पर गर्व है।और यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। खासकर मेडिकल जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में आपने अपनी पढ़ाई में बहुत मेहनत की है, और इसका फल मिला है।संस्था के प्रमुखजनों ने कहा मेडिकल क्षेत्र में हमेशा कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है। इसलिए, हमेशा सीखने के लिए उत्सुक रहे। अब आपकी असली पढ़ाई शुरू होगी। सरकारी कॉलेज में दाखिला मिलने के बाद, अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करें और सफलतापूर्वक अपना कोर्स पूरा करे। मेडिकल की पढ़ाई चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन सकारात्मक रहे और कड़ी मेहनत करते रहे। जी. जोशना के माता पिता ने भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। जी. जोशना ने कहा प्रति दिन 7 से 8 घंटे पढ़ाई करती हूँ और बचपन से मेरा लक्ष्य है कि मैं डॉक्टर बनू अब इस मुकाम को हासिल करके बहुत अच्छा महसूस हो रहा है और इस उपलब्धि का श्रेय माता पिता और अपने शिक्षको को दिया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संस्था के सलाहकार व मार्गदर्शक एनएन. राव, डॉ. के. चिरंजीवुलु, टी. गुन्नाराव, के. राम मूर्ति, एम. पापाराव, के. प्रसाद राव, जी. श्रीनिवास, आर. बालराजू, वाय. योगेश, बबलू श्रीनू , जी. जगन उपस्थित थे।

ऑनलाइन ठगी में शामिल म्यूल अकाउंट धारक महिला गिरफ्तार

कुम्हारी। थाना कुम्हारी पुलिस को जैसे ही म्यूल अकाउंट से जुड़ी जानकारी प्राप्त हुई, तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को हिरासत में लिया गया और न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। ऑनलाइन ठगी की रकम का आहरण-जांच में पाया गया कि आरोपी निशा बेहरा ने ऑनलाइन ठगी की रकम होना जानते हुए भी अपने एसबीआई बैंक खाते में म्यूल अकाउंट्स से प्राप्त रकम को चेक के माध्यम से आहरित किया।

4.50 लाख ठगी की रकम का खेल-आरोपी निशा बेहरा ने अपने एसबीआई खाते को 10,000 रुपये कमीशन पर एक फेरीवाले को उपलब्ध कराया। इस दौरान उसके खाते में 4,50,000/- की ठगी की रकम जमा हुई। बाद में उसने यह रकम चेक के माध्यम से आहरित कर फेरीवाले को सौंप दी और स्वयं 10,000/- का कमीशन प्राप्त किया। पुलिस ने बरामदगी की-आरोपिया से बैंक पासबुक, पैन कार्ड एवं चेक बुक जप्त कर उसे गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है।अन्य आरोपी की तलाश जारी-कुम्हारी पुलिस ने बताया कि इस पूरे प्रकरण में शामिल एक अन्य आरोपी फेरीवाले की तलाश जारी है।

गणेश प्रतिमा खरीदने आए शख्स से दिनदहाड़े 65 हजार की उठाईगिरी

महावीर चौक फ्लाईओवर के नीचे की घटना, पुलिस जांच में जुटी

राजनांदगांव। शहर के बीच महावीर चौक पर बुधवार को दिनदहाड़े 65 हजार रुपए की उठाईगिरी हो गई। घटना का पता चलते ही वहां हड़कंप मच गया। तत्काल पुलिस को सूचना दी गई, टीम भी इस मामले को लेकर जांच शुरू कर दी है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। ताकि आरोपी की पहचान की जा सके। मिली जानकारी के अनुसार दिलीप पूजारा महावीर चौक फ्लाईओवर के नीचे लगे दुकानों से गणेश प्रतिमा लेने पहुंचे थे। इस दौरान उनके पास बड़ी रकम मौजूद थी। प्रतिमा खरीदने के बाद उनसे रुपए अपने पास रख लिए। इसके बाद जब देखा कि पास रखे 65 हजार रुपए नहीं है। तब वह आसपास के लोगों और दुकानदारों से पूछताछ करने लगे। लेकिन इसका पता नहीं चला। त्यौहारी दुकान होने के कारण काफी लोग वहां मौजूद थे और आवाजाही भी काफी थी। इसलिए ऐसा माना जा रहा है कि आरोपी रकम को लेकर फरार हो गया। लेकिन शहर के बीच दिनदहाड़े भीड़भाड़ वाले इलाके में इस तरह की घटना होने से लोगों के बीच असुरक्षा का माहौल है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि फुटेज खंगाला जा रहा है, कुछ संदिग्धों की पहचान भी कर ली गई है, उस पर काम किया जा रहा है। उठाईगिरी करने वाले आरोपी को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

15 कैरेट सोने को 22 कैरेट बोल बेचा, फ्रॉड पर सेटिंग, ऐसी ठगी से सराफा मार्केट पर सवाल

बाहरी व्यापारियों का रूख करेंगे ग्राहक, राजनांदगांव में बड़े मामले को दबाया गया

■ जिस ज्वेलर्स मालिक ने ग्राहक से बेईमानी की, उसे बचाने लगे रहे कुछ व्यापारी

राजनांदगांव। संस्कारधानी में सदर बाजार के ज्वेलर्स मालिक ने अपने ग्राहक से ठगी की। 22 कैरेट सोने की बात कहकर उसे 15 कैरेट सोना दे दिया। यह बात जब खुली तो कुछ व्यापारियों ने मामले को सेट कर दिया। यह मामला तो दबा दिया गया, इसमें पहले ग्राहक पुलिस ने शिकायत कर कार्रवाई पर अड़ा था। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अब बड़ा सवाल यह है कि आने वाले दिनों में दीपावली का त्यौहार और शादियों का सीजन दोनों है। ग्राहक को कैसे भरोसा होगा कि वे सही मानकों का सोना खरीद रहा है। दूसरी तरफ ऐसे मामलों में व्यापारियों का ठगी करने वाले ज्वेलर्स मालिक के साथ खड़ा होना, ग्राहकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। सराफा व्यापारी की इस ठगी को लेकर शहर में काफी चर्चा है। क्योंकि बड़े फर्म की दुकान होने के बाद ग्राहकों से इस तरह की ठगी करना व्यापारियों पर भी सवाल खड़ा करता है। इसके अलावा सदर बाजार के कई ऐसे दुकानदार है जो बिना होलमार्क के जेवरात बेच रहे हैं। हाल ही में जो मामला सामने आया है, उसमें यदि ग्राहक अपने गहनों को गिरवी रखाने नहीं जाता तो शायद पता भी नहीं चलता कि उसके साथ ठगी हुई है। क्योंकि ज्वेलर्स मालिक ने तो उसे 22 कैरेट सोने का दाम लेकर बिक्री की थी। लेकिन रकम ही जरूरत पड़ने पर ग्राहक किसी अन्य दुकान में सोना गिरवी रखने गया और उसकी जांच में पता कि वह सोना 15 कैरेट का ही है। इसके बाद काफी हंगामा भी मचा।

दो पुराने मामले भी आए चर्चा में

सराफा व्यापारियों की मानें तो इस मामले के सामने आने के बाद दो और पुराने मामलों की चर्चा शुरू हो गई है। जिसमें इसी तरह सोने की खरीदी-बिक्री में टंच का खेल हुआ। यहां भी दो दुकानदारों ने ग्राहकों के साथ धोखा किया। माना जा रहा है, आने वाले दिनों में पुराने मामलों का भी खुलासा हो सकता है।

छोटे व्यापारी दबी जुबां से कर रहे विरोध

अपने ग्राहकों से इस तरह की ठगी करने का मामला सामने आने के बाद सराफा के व्यापार पर असर पड़ेगा, इसे तो नकारा नहीं जा सकता। लेकिन कुछ व्यापारियों ने ठगी करने वाले ज्वेलर्स मालिक के खिलाफशिकायत नहीं होने दी। इसे लेकर छोटे व्यापारियों में रोष है, उनका कहना है कि ऐसे मामलों के बाद ग्राहकी कम होगी और लोग बाहर के व्यापारियों पर भरोसा करेंगे। इससे छोटे सराफा दुकानदारों को ही नुकसान होगा। क्योंकि गहनों में की गई ठगी पूरी तरह से उजागर तो हो ही गई है। इसमें अब कुछ बचा ही नहीं है।

राजपूत क्षत्रिय समाज ने उद्योग मंत्री से मुलाकात कर किया सम्मान

■ उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने राजपूत क्षत्रिय समाज का जताया आभार

कोरबा। कोरबा राजपूत क्षत्रिय समाज जिला कोरबा के पदाधिकारी ने समाज के जिला अध्यक्ष ठाकुर अवधेश सिंह के नेतृत्व में मंगलवार को उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन से उनके निवास में मुलाकात कर उन्हें मिले अतिरिक्त प्रभार को लेकर बधाई देते हुए समाज की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर समाज के लोगों ने उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन का महामाला बनाकर सम्मान किया और भेंट स्वरूप उन्हें लखन सियाराम सहित हनुमान जी का छायाचित्र भेंट किया समाज से मिले सम्मान को लेकर उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने समाज के प्रति आभार जताया है। पूर्व कार्यक्रम के अनुसार मंगलवार को राजपूत क्षत्रिय समाज जिला कोरबा के जिला अध्यक्ष ठाकुर अवधेश सिंह के नेतृत्व में समाज के कोषाध्यक्ष ठाकुर बच्चू सिंह सहसचिव ठाकुर छन्नू सिंह समाजसेवी अंजना सिंह समाज के सक्रिय सदस्य ठाकुर शैलेश सिंह सोमवंशी उपाध्यक्ष ठाकुर विजय सिंह सदस्य गुलजार सिंह स्मिथ सिंह ठाकुर सुरेंद्र सिंह दीपक सिंह सहित बड़ी संख्या में समाज के अन्य सदस्यों ने उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन के निवास में पहुंचकर उनका अभिनंदन करते हुए उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया इस दौरान समाज के लोगों ने उद्योग एवं श्रम मंत्री को मिले आबकारी विभाग के अतिरिक्त प्रभार को लेकर उन्हें सम्मानित करते हुए कहा कि उद्योग मंत्री को मिला यह प्रभार न केवल कोरबा जिले के लिए बल्कि प्रदेश के लिए भी गौरवान्वित करने वाला क्षण है प्रदेश सरकार ने उद्योग एवं श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन के व्यक्तित्व और विकास कार्यों से प्रभावित होकर उन्हें अतिरिक्त नई जिम्मेदारी दी है। जिसका पूरे प्रदेश को लाभ होगा इस दौरान उद्योग एवं श्रम और आबकारी मंत्री लखन लाल देवांगन ने राजपूत क्षत्रिय समाज से मिले सम्मान के प्रति आभार जताया साथ ही विश्वास दिया है।

महापौर एवं आयुक्त ने नागरिकों से की अपील, मिलकर रखें शहर स्वच्छ, पंडालों में एकत्रित रखे, उठेगा कचरा, निगम की टीम रहेगी चौकस

बिराजे शहर में श्रीगणेश गणपति बप्पा, निगम का विशेष स्वच्छता अभियान शुरू

दुर्ग। गणेश चतुर्थी का पर्व शहर में उल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर नगर पालिक निगम ने नागरिकों से स्वच्छता बनाए रखने की अपील की है। महापौर अलका बाघमार और आयुक्त सुमित अग्रवाल ने संयुक्त बयान जारी कर कहा कि गणेशोत्सव के दौरान पंडालों और घरों में विशेष साफ-सफाई की व्यवस्था अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि यह पर्व केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी और संस्कृति का भी हिस्सा है कि हम अपने शहर को स्वच्छ बनाए रखें। निगम प्रशासन की ओर से सभी वार्डों में विशेष सफाई अभियान चलाया जाएगा। जहां-जहां गणेश पंडाल स्थापित होंगे, वहां सफाईकर्मी नियमित रूप से कचरा संग्रहण करेंगे।

निगम की तैयारी: निगम प्रशासन ने पहले से ही सफाई कर्मचारियों को निर्देशित कर दिया है कि वे पूरे त्यौहार के दौरान अलर्ट मोड पर रहें। कचरा संग्रहण के लिए अतिरिक्त वाहन तैनात किए जाएंगे और पंडालों के आस-पास सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

नागरिकों से अपील: महापौर और आयुक्त ने कहा कि नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी समझें। कचरे को कहीं भी न फेंकें, बल्कि उसे निगम द्वारा निर्धारित डस्टबिन या कचरा वाहन में ही डालें। इससे न केवल शहर की सुंदरता बनी रहेगी बल्कि बीमारियों का खतरा भी कम होगा।

सार्वजनिक स्वास्थ्य पर जोर: स्वच्छ वातावरण से त्योहार के दिनों में नागरिक स्वस्थ रहेंगे और नगर का वातावरण भी शुद्ध व स्वच्छ बना रहेगा। निगम प्रशासन ने साफ किया कि अकेले प्रशासन से स्वच्छता अभियान सफल नहीं होगा, इसके लिए प्रत्येक नागरिक का सहयोग अनिवार्य है।

महापौर का संदेश: महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने कहा कि गणेशोत्सव का यह पावन अवसर हमें 'स्वच्छ शहर, स्वस्थ नागरिक' का संकल्प दिलाता है। आइए, इस पर्व को हम सब मिलकर न केवल आस्था और श्रद्धा के साथ मनाएं, बल्कि अपने शहर को भी साफ-सुथरा रखने की जिम्मेदारी निभाएं।

पत्नी और प्रेमी ने मिलकर किया पति का कत्ल, शव मिलने से खुला राज

दुर्ग। पुलिस चौकी नगपुरा के अंतर्गत आंवला बाड़ी में एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने की सूचना पुलिस को मिली। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा तैयार किया और पहचान के लिए आसपास के जिलों में रेडियो मैसेज प्रसारित कराया गया। साइबर प्रहरी के माध्यम से फोटो वायरल करने पर मृतक की पत्नी अंजनी ठाकुर ने शव की पहचान अपने पति धनेश ठाकुर के रूप में की। हत्या की पुष्टि-पोस्टमार्टम रिपोर्ट में स्पष्ट हुआ कि मृतक की मौत किसी ठोस वस्तु से चोट लगने के कारण हुई है। इसके आधार पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ हत्या का अपराध दर्ज कर जांच शुरू की। शक की सुई पत्नी और उसके प्रेमी पर-जांच के दौरान पता चला कि मृतक की पत्नी अंजनी ठाकुर के प्रेम संबंध हरपाल सिंह राजपूत उर्फ छोटू (निवासी सरस्वती नगर, दुर्ग) से पिछले 25 वर्षों से चल रहे थे। मृतक धनेश ठाकुर शराब पीने का आदी था और पिछले कुछ महीनों से काम पर भी नहीं जा रहा था। वह अक्सर पत्नी से शराब के लिए पैसे मांगता और नहीं देने पर गाली-गलौज करता था। धनेश का घर पर लगातार रहना अंजनी और उसके प्रेमी हरपाल के मिलने-जुलने में बाधा बन रहा था।

सुनियोजित तरीके से रची गई हत्या- पत्नी और प्रेमी ने मिलकर धनेश को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। 22 अगस्त को हरपाल सिंह ने धनेश को अपनी स्कूटी में बैठाकर शराब पिलाने के बहाने नगपुरा के आंवला बगीचे ले गया। वहां धनेश को शराब पिलाने के बाद नशे में धुत होने पर हरपाल ने पत्थर से उसके सिर पर वार कर हत्या कर दी। इसके बाद उसने अंजनी को फोन कर सूचना दी और घर लौट गया। दोनों आरोपी गिरफ्तार-पुलिस ने साक्ष्यों के आधार पर हरपाल सिंह राजपूत उर्फ छोटू (45 वर्ष) और अंजनी ठाकुर (44 वर्ष) को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों के खिलाफहत्या का अपराध दर्ज कर वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।

पुलिस टीम का सराहनीय योगदान- इस मामले का पर्दाफाश करने में थाना प्रभारी पुलगांव निरीक्षक प्रकाशकांत, एसीसीयू प्रभारी निरीक्षक प्रमोद रूसिया, चौकी प्रभारी मनोज यादव, उप निरीक्षक खेलन साहू तथा एसीसीयू टीम के आरक्षक नरेन्द्र सहारे, शौकत हयात खान, हिरामन साहू, सनत भारती और अश्वनी यदु का विशेष योगदान रहा।

रामविचार पर पास्को एक्ट का मामला दर्ज, गिरफ्तार कर पुलिस ने भेजा जेल

रामानुजगंज। 13 वर्षीय नाबालिग के साथ बहला फुसला कर शारीरिक शोषण कर पीड़िता को गर्भवती करने वाला आरोपी को पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार कर जेल भेज दिया हैं। पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार 4 फरवरी 2025 को नाबालिक अपने घर से नदी की ओर नहाने जा रही थी इस दौरान 19 वर्षीय आरोपी रामविचार भुइयां निवासी ग्राम चूतरु थाना रंका झारखंड के द्वारा पीड़िता को बहला फुसला कर उसके साथ शारीरिक शोषण करने के बाद पीड़िता को धमकाते हुए कहा कि इस बात की चर्चा यदि किसी से की तो जान से मार दूंगा। तत्पश्चात आरोपी अन्य प्रदेश कमाने चला गया। इस बीच पीड़िता गर्भवती हो गई आरोपी वापस आने के बाद 24 अगस्त 20 25 को पीड़िता से मिलने के लिए पहुंचा और आपत्तिजनक स्थित ने पकड़ा गया। किंतु वहां से अपने मोटरसाइकिल को छोड़कर फरार हो गया। जब परिजनों ने पीड़िता से पूछताछ की तो पीड़िता ने आपबीती बताई। पीड़िता की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी रामविचार भुईयां के विरुद्ध आईपीसी की धारा पास्को एक्ट के तहत मामला पंजीबद्ध कर विवेचना उपरांत आरोपी रामविचार भुइयां को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में जेल भेज दिया हैं।

भिलाई शहर की सड़के गौठान में हुई तब्दील

■ सभी मुख्य मार्गो में मवेशियों का जमावड़ा
■ मवेशी मालिकों पर कार्रवाई से कतराता है निगम
■ निगम के काऊकैचर के कर्मचारी करते हैं टाइम पास

भिलाई। भिलाई शहर के सभी मुख्य मार्ग गौठान में तब्दील हो चुके हैं सड़क के बीचो-बीच बैठे आवारा मवेशियों के कारण दुर्घटनाओं का अंदेशा लगातार बढ़ रहा है और कई दुर्घटनाएं भी इन मवेशियों की वजह से हो चुकी है आवारा मवेशियों की धर पकड़ को लेकर नगर निगम द्वारा कोताही बरती जा रही है नगर निगम के को काऊ कैचर के कर्मचारी होटलों और पान ठेलों में आराम फरमाते ही नजर आते हैं। सड़कों पर बढ़ती आवारा मवेशियों की संख्या के कारण कुछ दिनों पूर्व नगर निगम द्वारा मवेशी मालिकों की बैठक निगम में ली गई थी जिसमें मवेशी मालिकों को अपने मवेशियों को सड़क में छोड़ने पर कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी गई थी लेकिन इस बैठक का कोई असर देखने को नहीं मिला मवेशी मालिक अपने दुधारू मवेशियों का दूध निकालकर उन्हें चरने सड़कों पर छोड़ देते हैं। कई मवेशी भारी वाहनों की चपेट में भी आ चुके हैं वहीं दो पहिया चालक इन मवेशियों की वजह से दुर्घटनाओं का शिकार बने हैं। किसी भी मवेशी मलिक पर नगर निगम द्वारा अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है जिसकी वजह से शहर की सड़के गोठांनो में तब्दील हो चुकी हैं। निगम को शायद किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार है जिसके बाद ही व्यवस्था में सुधार देखने को मिले।

स्वदेशी उद्यमिता के लिए महिलाओं को किया गया प्रोत्साहित

कोरबा। स्वदेशी उद्यमिता को प्रोत्साहित कर समाज के लोगों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर से संबद्ध कमला नेहरू महाविद्यालय की एन एस एस इकाई के द्वारा रासेयो गोदग्राम भादा में दिवा शिविर का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रशांत बोपापुरकर के मार्गदर्शन तथा रासेयो जिला संगठक वाय के तिवारी के नेतृत्व में स्वयंसेवकों ने ग्राम के महिला स्व सहायता समिति के सदस्यों को स्थानीय उत्पादों के निर्माण उनसे होने वाले लाभों तथा देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्रदान की। स्वदेशी उद्यमिता स्वावलंबी व आत्मनिर्भर भारत बनाने का सशक्त माध्यम है हमें इस लक्ष्य को प्राप्त करना है इस उद्देश्य से रासेयो स्वयंसेवक देवांश कुमार तिवारी, धारणा केवट पूजा केवट मुस्कान राजपूत शिवानी सिंह राजपूत, आंचल यादव रितिका यादव ने बिहान योजना के अंतर्गत गठित स्व सहायता समिति की महिलाओं को जागरूक किया। रासेयो जिला संगठक वाय के तिवारी ने ग्राम की मां भवानी महिला स्व सहायता समिति के सदस्यों को उद्यमिता के लाभ समझ कर स्वदेशी व स्वावलंबी भारत बनाने के लिए शपथ दिलाई। दिवा शिविर के आयोजन में कार्यक्रम अधिकारी जी एम उपाध्याय, प्रीति द्विवेदी , वरिष्ट स्वयंसेवक शनिदेव खूंटे का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम में मां भवानी स्व सहायता समिति की अध्यक्ष मंजूषा यादव सचिन कुमुदिनी यादव सदस्य गण निशा यादव, अंजली यादव, नीतू यादव, रमा यादव, कंचन यादव, प्रिया यादव, संतोषी यादव आदि उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा असमा पब्लिशर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, ग्रास मेमोरियल सेंटर के बाजू, जयस्तंभ चौक, रायपुर (छ.ग.)-492001 से मुद्रित करवाकर व गदा चौक, फरीद नगर रोड स्वर्गीय तुलाराम मेमोरियल स्कूल के पास सुपेला भिलाई, जिला- दुर्ग (छ.ग.) पिन कोड-490023 से प्रकाशित। संपादक : संजय तिवारी, मो. 9200000214 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारा न्यायलीन क्षेत्र दुर्ग होगा। Email : loktantraprahrinews@gmail.com